

कल्याण



वर्ष
९०

गंगा-अङ्क

संख्या
१



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

दुर्गति-नाशिनि दुर्गा जय जय, काल-विनाशिनि काली जय जय।
 उमा-रमा-ब्रह्माणी जय जय, राधा-सीता-रुक्मिणि जय जय॥
 साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, जय शंकर।
 हर हर शंकर दुखहर सुखकर अघ-तम-हर हर हर शंकर॥
 हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

जय जय दुर्गा, जय मा तारा। जय गणेश जय शुभ-आगारा॥

जयति शिवाशिव जानकिराम। गौरीशंकर सीताराम॥

जय रघुनन्दन जय सियाराम। ब्रज-गोपी-प्रिय राधेश्याम॥

रघुपति राघव राजाराम। पतितपावन सीताराम॥

(संस्करण २,१५,०००)

‘गंगा ही परम गति हैं’

गङ्गैव परमो बन्धुर्गङ्गैव परमं सुखम्। गङ्गैव परमं वित्तं गङ्गैव परमा गतिः॥
 गङ्गैव परमा मुक्तिर्गङ्गा सारतरेति ये। विभावयन्ति तेषां तु न दूरस्था कदाचन॥
 गङ्गातीरं परित्यज्य योऽन्यत्र निवसेन्नरः। करस्थां संत्यजन्मुक्तिः सोऽन्वेषी नरकस्य तु॥
 धन्यः स देशो यत्रास्ति गङ्गा त्रैलोक्यपावनी। गङ्गाहीनस्तु यो देशो न प्रदेशः स भण्यते॥
 गङ्गातीरे वरं भिक्षा वरं प्राणवियोजनम्। अन्यत्र पृथिवीपत्वं न नरः प्राथयेत्कचित्॥
 यस्मिन्देशे वसेदेको गङ्गाभक्तिपरो नरः। सोऽपि पुण्यतमो देशस्तत्र दानं महाफलम्॥
 श्राद्धं च तर्पणं तत्र पितृणां तृप्तिकारकम्। अनन्तफलदं ज्ञेयं जपहोमादिकं तथा॥
 गङ्गा नाम परं सौख्यं गङ्गा नाम परं तपः। गङ्गेति संस्मरन्तित्यं स्य नास्ति यमाद्भ्यम्॥

‘गङ्गा ही परम बन्धु हैं, गङ्गा ही परम सुख हैं, गङ्गा ही परम धन हैं, गङ्गा ही परम गति हैं, गङ्गा ही परम मुक्ति हैं और गङ्गा ही परम तत्त्व हैं’ जो लोग ऐसी भावना करते हैं, गङ्गा उनसे कभी भी दूर नहीं रहती हैं। जो मनुष्य गङ्गाका तट छोड़कर अन्यत्र निवास करता है, वह मानो अपने हाथमें स्थित मुक्तिका त्याग करके नरककी खोज करता है। वह देश धन्य है, जहाँ तीनों लोकोंको पवित्र कर देनेवाली गङ्गा हैं। जो देश गङ्गासे रहित है, उसे देश नहीं कहा जा सकता। गङ्गाके तटपर रहते हुए भिक्षा श्रेष्ठ है तथा वहाँ प्राणान्त हो जाना भी श्रेयस्कर है। मनुष्यको दूसरे स्थानपर राजत्वके लिये कभी भी प्रार्थना नहीं करनी चाहिये। गङ्गाकी भक्तिमें तत्पर रहनेवाला एक भी मनुष्य जिस देशमें रहता है, वह देश भी परम पुण्यशाली है और वहाँपर दिया गया दान महान् फल देनेवाला होता है। वहाँपर किया गया श्राद्ध तथा तर्पण पितरोंको तृप्त करनेवाला होता है। साथ ही वहाँपर किये गये जप-होम आदिको अनन्त फल देनेवाला समझना चाहिये। गङ्गाका नाम-स्मरण परम आनन्द तथा गङ्गाका नामस्मरण परम तप है। जो मनुष्य गङ्गा—इस नामका नित्य स्मरण करता है, उसे यमराजका भय नहीं रहता। [श्रीमहाभागवतपुराण]

* कृपया नियम अन्तिम पृष्ठपर देखें।

वार्षिक शुल्क *
 अजिल्द ₹ २००
 सजिल्द ₹ २२०

जय पावक रवि चन्द्र जयति जय। सत्-चित्-आनंद भूमा जय जय॥
 जय जय विश्वरूप हरि जय। जय हर अखिलात्मन् जय जय॥
 जय विराट् जय जगत्पते। गौरीपति जय रमापते॥

पंचवर्षीय शुल्क *
 अजिल्द ₹ १०००
 सजिल्द ₹ ११००

विदेशमें Air Mail } वार्षिक US\$ 45 (Rs.2700) { Us Cheque Collection
 सजिल्द शुल्क } पंचवर्षीय US\$ 225 (Rs.13500) { Charges 6\$ Extra

संस्थापक — ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका

आदिसम्पादक — नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार

सम्पादक — राधेश्याम खेमका, सहसम्पादक — डॉ० प्रेमप्रकाश लक्कड़

केशोराम अग्रवालद्वारा गोविन्दभवन-कार्यालय के लिये गीताप्रेस, गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित

website : www.gitapress.org

e-mail : kalyan@gitapress.org

© (0551) 2334721

सदस्यता-शुल्क — व्यवस्थापक — ‘कल्याण-कार्यालय’, पो० गीताप्रेस — २७३००५, गोरखपुर को भेजें।

Online सदस्यता-शुल्क भुगतानहेतु gitapress.org पर Online Magazine Subscription option को click करें।

अब ‘कल्याण’ के मासिक अङ्क kalyan-gitapress.org पर निःशुल्क पढ़ें।

‘गङ्गा-अङ्क’ की विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
१- भागीरथी-वन्दना	११	२३- श्रीगंगादेवी (स्वामी श्रीविज्ञानहंसजी)	५९
स्मरण-स्तवन		२४- श्रीगङ्गाष्टकम् (आदि सुमेरुपीठाधीश्वर जगद्गुरु	
२- श्रुतिसरिता	१९	शङ्कराचार्य ब्रह्मलीन स्वामी श्रीमहेश्वरानन्द-	
३- श्रीगङ्गाजीके विविध ध्यान-स्वरूप	२०	सरस्वतीजी)	६२
४- श्रीवाल्मीकिविरचित गङ्गाष्टक	२१	२५- गंगाजल राशि सुहावन [कविता]	
५- श्रीशङ्कराचार्यकृत गङ्गास्तुति	२३	(स्वामी श्रीमहेश्वरानन्दजी सरस्वती)	६३
६- श्रीतुलसीदासजीकी गंगा-प्रार्थना	२५	२६- पतितपावनी माता गंगा (गोलोकवासी भक्त	
७- श्रीगंगाजीकी आरती	२५	श्रीरामशरणदासजी) [प्रे०—श्रीधर्मेन्द्रजी गोयल]..	६४
८- गंगा-गौरव	२६	२७- पतितपावनी गंगा [कविता] (श्रीवेणीरामजी त्रिपाठी	
९- नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजम् (राधेश्याम खेमका) ..	३१	‘श्रीमाली’)	६६
प्रसाद		२८- गंगा-यात्रा [सन्त श्रीगयाप्रसादजीकी गंगाचर्या]	
१०- ब्रह्मलीन श्रीउडियाबाबाजी महाराजकी गंगा-निष्ठा	४१	(श्रीकृष्णदास)	६७
११- श्रीगंगाजीकी महिमा	४१	२९- ‘जय माँ गंगे’ [कविता] (श्रीशरदजी अग्रवाल, एम०ए०) ...	६८
१२- श्रीभागीरथी (गंगा)-स्नान-व्रत (ब्रह्मलीन जगद्गुरु		३०- ब्रह्मद्रवमयी गंगा (आचार्य पं० श्रीबलदेवजी उपाध्याय)	६९
शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी		३१- श्रीगंगा और यमुनाका जल (पं० श्रीगंगाशंकरजी मिश्र,	
श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज)		एम०ए०)	७१
[प्रेषक—प्रो० श्रीबिहारीलालजी टांटिया]	४२	३२- गंगाके उद्गार [कविता]	
१३- महाभाग राजर्षि भगीरथ (ब्रह्मलीन धर्मसम्राट् स्वामी		(पाण्डेय पं० श्रीरामनारायणदत्तजी शास्त्री ‘राम’)..	७४
श्रीकरपात्रीजी महाराज)	४४	आशीर्वाद	
१४- गंगा भारतीय संस्कृतिकी प्रतीक (योगिराज श्रीदेवराहा		३३- गंगाका महत्त्व (अनन्तश्रीविभूषित दक्षिणाम्नायस्थ	
बाबाजी महाराज) [प्रेषक—श्रीमदनजी शर्मा]	४५	शृंगेरीशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी	
१५- स्रोतसामस्मि जाह्नवी (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय		श्रीभारतीतीर्थजी महाराज)	७५
श्रीजयदयालजी गोयन्दका)	४७	३४- ‘औषधं जाह्नवीतोयम्’ (अनन्तश्रीविभूषित	
१६- गाङ्गं पुनातु सततम् (स्वामी श्रीओंकारानन्दजी महाराज,		ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं श्रीद्वारकाशारदापीठाधीश्वर	
आदिबदरी)	४८	जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्दसरस्वतीजी	
१७- उनका सहज सुगम उद्धार [कविता] (श्रीमती		महाराज)	७६
शिवानी मिश्रा, एम०ए०, बी०एड०)	५१	३५- श्रीगंगाजीको विकृत करनेवाली गतिविधियाँ	
१८- श्रद्धा और विश्वासके साथ गंगास्नानका वास्तविक		निरस्त हों (अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य	
फल (नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी		पुरीपीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिश्चलानन्दसरस्वतीजी	
पोद्दार)	५२	महाराज)	८०
१९- श्रीगंगाजी ज्ञानस्वरूपा हैं (गोलोकवासी परम भागवत		३६- मंगोलियामें अभी भी गंगाजलकी पारम्परिक	
संत श्रीरामचन्द्र केशव डोंगरेजी महाराज)	५३	मान्यता	८१
२०- स्रोतसामस्मि जाह्नवी (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी		३७- श्रीगंगाजीका पावन स्वरूप (अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु	
श्रीरामसुखदासजी महाराज)	५४	श्रीनिम्बाकार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य	
२१- मानसमें गंगा-कथा (प०पू० दण्डी स्वामी		श्री ‘श्रीजी’ महाराज)	८२
श्रीप्रज्ञानानन्दजी सरस्वती)	५५	३८- माँ गंगा : स्नानमहिमा एवं पालनीय नियम (दण्डी	
२२- स्नान-विज्ञान एवं गंगाजलकी विशेषता (स्वामी		स्वामी श्रीमहेश्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज,	
श्रीशंकरानन्दजी सरस्वती)	५७	पुराणाचार्य)	८३

विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
३९-जय गंगे माँ तरल तरंगे [कविता] (डॉ० श्रीअनन्तरामजी मिश्र 'अनन्त')	८६	६१-कल्याणकारी गंगाजल एवं पुण्यसलिला भागीरथी (श्रीचुन्नीलालजी भारद्वाज)	१४६
४०-गंगाका तीर्थत्व एवं माहात्म्य (पूज्य संत श्रीहरिहरजी महाराज दिवेगाँवकर)	८७	६२-हे गंगे ! तेरी महिमा अनन्त (डॉ० श्रीराजीवजी प्रचण्डिया)	१५०
४१-गंगा अमृततुल्य है [प्रेषक—प्रेमप्रकाशी संत मोनूराम]..	८८	६३-वैदिक गंगा (डॉ० श्रीभागीरथप्रसादजी त्रिपाठी 'वागीश')	१५२
४२-संकटापन्न हिमालय और गंगा (स्वामी श्रीविवेकानन्दजी सरस्वती, कुलाध्यक्ष)	८९	६४-ब्रह्मद्रव भगवती गंगा (डॉ० श्रीप्रेमप्रकाशजी लक्कड़)	१५५
४३-सम्पूर्ण पापोंके नाशका उपाय [संकलनकर्ता—नागौरवाले पं० श्रीनरसीजी महाराज]	९१	६५-त्रिपथगामिनी (श्रीलक्ष्मण नारायणजी गर्दे)	१५६
४४-'नास्ति गङ्गासमं पुण्यम्' (ब्रह्मचारी श्रीत्र्यम्बकेश्वर चैतन्यजी)	९२	६६-गंगा : सदानरीरा पुण्यतोया नदी (साहित्यवाचस्पति श्रीयुत डॉ० श्रीरंजनजी सूरिदेव)	१५८
गंगातत्त्व-दर्शन		६७-हिमालयकी ज्येष्ठ कन्या भागीरथी गंगा (डॉ० श्रीरामकान्तजी पाण्डेय)	१५९
[क] गंगा-माहात्म्य		६८-गंगा मैया ! हम सदा तुम्हारे ऋणी रहेंगे (साधु श्रीनवलरामजी शास्त्री)	१६१
४५-गंगाकी अमर गाथा : देशकी सांस्कृतिक संजीवनी (म० म० देवर्षि श्रीकलानाथजी शास्त्री)	९५	६९-गंगागीत [कविता] (प्रो० डॉ० श्रीजयनारायणजी मिश्र)	१६२
४६-भगवती गंगाके लिये लोकपावन आचार (प्रो० श्रीयुत श्रीकिशोरजी मिश्र)	९९	७०-ज्ञान-गंगा—गंगामाता (डॉ० श्रीवासुदेवशरणजी अग्रवाल)	१६३
४७-सोमरस है गंगाजल (डॉ० श्रीभगवतीप्रसादजी पुरोहित)	१०४	७१-भारतीय संस्कृतिकी स्रोतस्विनी गंगा (प्रो० श्रीनागेन्द्रजी पाण्डेय)	१६४
४८-भारतीय संस्कृतिकी अमर-धार गंगा (श्रीगौरीशंकरजी गुप्त)	१०६	७२-श्रीगंगामहिमा [कविता] (पंचरसाचार्य, श्रद्धेय स्वामी श्रीरामहर्षणदासजी महाराज) [प्रेषक—पं० रामायणप्रसादजी गौतम]	१६५
४९-मूर्त शक्ति गंगा माता (डॉ० श्रीअनन्तजी मिश्र)	११०	७३-गंगास्नानसे पापोंका नाश तथा कल्याण (श्रीभीकमचन्द्रजी प्रजापति)	१६६
५०-गंगा एवं उसके अन्य अभिधानोंका नामकरण (डॉ० श्रीशरद् चन्द्रजी पेंढारकर)	११३	७४-संकल्पसिद्धिदा गङ्गा मता कल्पलतासमा (आचार्य श्रीवेदप्रकाशजी मिश्र, वरिष्ठ शोधछात्र)	१६८
५१-मोक्षदायिनी माँ गंगा (वाचस्पति डॉ० श्रीदिव्यचेतनजी ब्रह्मचारी, व्याकरणाचार्य, वेदान्ताचार्य, एम०ए० (संस्कृत))..	११७	७५-गंगा (महामहोपाध्याय पं० श्रीगिरिधरजी शर्मा चतुर्वेदी) [प्रेषक—श्रीअमितकुमार त्रेहन]	१७२
५२-श्रद्धा-भक्तिमयी एवं ज्ञान-विज्ञानरूपिणी हमारी गंगा (श्रीअशोकजी जोषी, एम० ए०, बी० एड०)	१२०	७६-गंगाका आर्थिक एवं भौगोलिक महत्त्व (श्री बी०एस० रावत 'चंचल')	१७३
५३-गंगातत्त्वदर्शन (एकराट् पं० श्रीश्यामजीतजी दुबे 'आथर्वण')	१२३	[ख] गंगाके पौराणिक आख्यान	
५४-'गंग सकल मुद मंगल मूला' (श्रीकुलदीपजी उप्रेती)	१२८	७७-राजा सौदास [कल्माषपाद]-पर गंगाजीकी कृपा (श्रीशिवनाथजी दुबे)	१७७
५५-गंगा पतितपावनी (डॉ० श्रीराजलक्ष्मीजी वर्मा)	१३३	७८-भगवती गंगाका 'विष्णुपदी' नाम पड़नेका आख्यान (") ...	१८०
५६-'सुरसरि सम सब कहँ हित होई' (महामहोपाध्याय डॉ० श्रीकैलाशनाथजी द्विवेदी, डी० लिट०)	१३६	७९-गंगाके द्रवरूपमें आविर्भूत होनेकी कथा (") ..	१८२
५७-गंगा साक्षात् ब्रह्मद्रव हैं (शास्त्रार्थपंचानन पं० श्रीप्रेमाचार्यजी शास्त्री)	१३९	८०-गंगा और भगवान् विष्णुके विवाहकी कथा (") ..	१८३
५८-गुलाबजल और गंगाजल [कविता] (श्रीपृथ्वीसिंहजी चौहान 'प्रेमी')	१४१	८१-लक्ष्मी, सरस्वती और गंगाका रोचक आख्यान (") ..	१८५
५९-तीर्थरूपा महिमामयी गंगा (श्रीगदाधरजी भट्ट)	१४२	८२-सगरपुत्रोंके उद्धारके लिये गंगावतरणकी कथा (") ..	१८७
६०-गंगाजलकी महान् महिमा (डॉ० श्रीप्रणवजी पण्ड्या, एम० डी०, कुलाधिपति)	१४४	८३-गंगाका भीष्मजननी होनेका आख्यान (") ..	१९२
		८४-सर्वान्तक व्याधकी कथा	१९४
		८५-इन्द्रकी ब्रह्महत्यासे मुक्ति	१९५
		८६-गंगास्नानसे कुष्ठरोगसे मुक्ति	१९५

विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
८७- गंगा-गजल (श्रीरसूल अहमद 'सागर') [प्रेषक—श्रीराधेश्यामजी 'योगी']	१९६	१०८- गंगाजल-प्रदूषण—अनुपेक्षणीय सांस्कृतिक विघटन (प्रो० डॉ० श्रीसीतारामजी झा 'श्याम', एम० ए० (गोल्डमेडलिस्ट), पी-एच०डी०, डी०लिट०)	२८३
८८- गंगाजीके सम्पर्कसे चण्डशर्माकी पाप-शुद्धि	१९७	१०९- गंगा-प्रदूषण और उसके निवारणके प्रयास (डॉ० श्रीअशोकजी पण्ड्या)	२८५
८९- धनाधिप वैश्यकी कथा	१९८	११०- नमामि गंगे, हर-हर गंगे [कविता] (श्रीगिरीश पंकजजी)	२८६
९०- गंगावतरणकी विभिन्न कथाएँ (श्रीनवीनजी आचार्य, एम० ए०, बी० कॉम०) ...	१९८	१११- गंगाजलके वर्षों खराब नहीं होनेका रहस्य (श्रीरामजी शास्त्री)	२८७
गंगाका भूगोल		११२- गंगाका अस्तित्व बचाना—एक चुनौती (श्रीनरेन्द्रकुमारजी शर्मा, एम० ए०, बी० एड०)	२८९
गोमुखसे गंगासागरतक गंगाकी यात्रा		११३- गंगाके अस्तित्वको देवभूमिके ४५० बाँधोंसे खतरा ! [श्रीरामजी शास्त्री]	२९१
९१- गंगा नदीका भौगोलिक भूदृश्य : एक सिंहावलोकन (डॉ० श्रीसुरेशचन्द्रजी बन्सल, पी-एच० डी०, आई० आई० आर० एस० (सी))	२०३	११४- नमामि गंगे [कविता] (श्रीसंजीव मनोहरजी साहिल) .	२९२
९२- 'गंगाकी मुख्य धाराकी खोजमें' (श्रीफादर द्योतियेन). ...	२०५	११५- अगर टिहरी बाँध टूटा तो ? (प्रस्तुति—श्रीअजयसिंहलजी 'अजेय')	२९३
९३- पतितपावनी गंगाकी यात्रा (डॉ० श्रीविद्याभास्करजी वाजपेयी)	२०९	११६- उत्तराखण्डमें गंगा नदी-घाटीमें जल-विद्युत्-परियोजनाएँ ..	२९४
९४- गंगातीर्थ—गोमुखसे गंगासागरतक (श्रीशान्तनुकुमारजी मिश्र)	२१२	११७- उत्तर प्रदेशमें गंगा-प्रदूषणकी स्थिति (डॉ० श्रीअजितकुमार सिंहजी)	२९५
९५- भागीरथी गंगाके पग-पगपर तीर्थ (डॉ० श्रीलक्ष्मीनारायण टण्डनजी 'प्रेमी')	२१७	११८- 'माँ गंगा' का संकट कैसे दूर होगा ? (श्रीदीनानाथजी झुनझुनवाला)	२९८
९६- गंगोत्तरी (श्रीरामेश्वरजी टाँटिया)	२२१	११९- गंगा-निर्मलीकरणके सम्बन्धमें वर्तमानमें हो रहे प्रयत्नोंकी समीक्षा (श्री बी० एस० रावत 'चंचल').	३०१
९७- ऋग्वैदिक सिन्धुकी प्रमुख सप्त नद्यः—स्वसाएँ (श्रीपानसिंहजी रावत)	२२४	१२०- हर भारतीयका संकल्प हो—'गाङ्गेयजलं निर्मलम्' (श्रीराधाकृष्णजी बजाज)	३०३
९८- भागीरथीके उद्गमकी खोज (श्रीजगदीशचन्द्रजी बसु) [रूपान्तर—डॉ० श्रीरामशंकरजी द्विवेदी]	२२८	१२१- जल-विद्युत्का ताण्डव (डॉ० श्रीभरतजी झुनझुनवाला)	३०४
९९- गंगाके उद्गम—'गोमुख' की रोमांचक यात्रा (श्रीराजेन्द्र मोहनजी शुक्ल)	२३१	१२२- गंगापर 'वाटर वे' का संकट (श्रीरमेशकुमारजी मुमुक्षु)	३०६
१००- उत्तरांचलके पंचप्रयाग (श्रीआद्याप्रसाद सिंहजी 'प्रदीप')	२३६	१२३- गंगा कहे पुकार के (डॉ० श्रीशुभंकर बाबूजी एम० ए०).	३०७
१०१- गंगोत्री (श्रीकाकाजी कालेलकर) [प्रेषक—डॉ० श्रीरामशंकरजी द्विवेदी]	२३९	१२४- क्या गंगाका प्रवाह पुनः निर्मल होगा ? (श्री वी० पी० नैनवाल)	३०९
१०२- गंगा और सागरके मिलनका तीर्थ—गंगासागर (डॉ० श्रीरमेशजी 'मयंक')	२४२	१२५- गंगाप्रदूषण—कारण और निवारण (स्वामी श्रीशिवानन्दजी महाराज, कनखल)	३१०
१०३- श्रीगंगाजी—यात्रादर्शन (पं० श्रीदयाशंकरजी दुबे, एम० ए०, एल-एल० बी०)	२४३	१२६- गंगाजलपर वैज्ञानिक अनुसन्धान (श्रीश्रीकृष्णजी श्रीवास्तव)	३१३
गंगाप्रदूषण—कारण और निवारण		१२७- माँको बचा लो (श्रीविनोद जम्भदासजी कड़वासरा)	३१५
१०४- पर्यावरण और प्राणिजगत्का अन्तःसम्बन्ध (ले० जनरल (डॉ०) श्रीशिवरामजी मेहता, एम० डी० (मेडिसिन))	२७३	१२८- धन-धन मातु गंग, मुनि जन चाहत प्रसंग (डॉ० श्रीभानुजी मेहता)	३१६
१०५- गंगाकी महिमा क्यों ? (डॉ० श्रीशान्तिस्वरूपजी गुप्त, पूर्व कुलपति) ...	२७७	१२९- मानव-जीवनका साफल्य—भगवती गंगाका सेवन ..	३१८
१०६- गंगाके प्रवाहका अवरुद्ध होना अनिष्टका सूचक (श्रीटीकारामजी मैठाणी)	२८०		
१०७- गंगा-महिमा [कविता] (श्रीगेन्दनलालजी कनौजिया)	२८२		

विषय	पृष्ठ-संख्या
सत्साहित्यमें गंगा	
१३०-धर्मशास्त्रोंमें गंगा (भारतरत्न महामहोपाध्याय डॉ० श्रीपाण्डुरंग वामनजी काणे) [अनु०—श्रीअर्जुनजी चौबे काश्यप]	३१९
१३१-संस्कृतके प्राचीन वाङ्मयमें गंगाका उल्लेख (आचार्य श्रीकरुणापतिजी त्रिपाठी)	३२२
१३२-संस्कृत साहित्यमें गंगा (श्रीमधुसूदनप्रसादजी मिश्र 'मधुर')	३२४
१३३-संस्कृत वाङ्मयमें भगवती गंगा (डॉ० श्रीगिरिजाशंकरजी शास्त्री)	३२८
१३४-योगवासिष्ठमें प्राप्त राजर्षि भगीरथका आख्यान ..	३३२
१३५-गोस्वामी तुलसीदासनिरूपित गंगाकी यशोगाथा (विद्यावाचस्पति डॉ० श्रीदिनेशचन्द्रजी उपाध्याय, एम०एस-सी०, पी-एच०डी०)	३३४
१३६-महाकवियोंकी दृष्टिमें गंगा (श्रीउमेशप्रसादजी सिंह) ..	३३७
१३७-गंगा और हिन्दी साहित्य (श्रीकमलाप्रसादजी अवस्थी 'अशोक' बी० ए०, विशारद)	३३९
१३८-पंच पुण्य	३४५
१३९-गंगाकी गरिमाके गायक कतिपय हिन्दी-कवि (डॉ० श्रीतारकेश्वरजी उपाध्याय)	३४६
१४०-हिन्दी काव्योंमें गंगा-वर्णन (डॉ० श्रीसूर्यप्रसादजी दीक्षित) ..	३५०
१४१-आयुर्वेद और गंगाजल (प्रो० श्रीअनूपकुमारजी गक्खड़)	३५३
१४२-ज्योतिषशास्त्रमें तीर्थयात्रा एवं गंगास्नानके योग (श्रीशिवनाथजी पाण्डेय, शास्त्री, एम०ए०)	३५४
१४३-पंडितराज जगन्नाथकी गंगोपासना (डॉ० श्रीशशिधरजी शर्मा, वाचस्पति, आचार्य, एम०ए० (हि०सं०), डी-लिट०)	३५७
१४४-माता गंगाका सर्वभूतहितैषिणी स्वरूप	३६०
१४५-भारतीय मूर्तिकलामें देवनदी गंगाका शिल्पांकन (प्रो० डॉ० ए० एल० श्रीवास्तव)	३६१
१४६-प्राचीन भारतीय सिक्कोंपर गंगा (डॉ० मेजर श्रीमहेशकुमारजी गुप्ता)	३६५
१४७-शास्त्रीय संगीतकी बंदिशोंमें गंगा-वर्णन (श्रीकैलाश पंकजजी श्रीवास्तव)	३६७
१४८-रहीमका संस्कृत स्तोत्र—गंगाष्टकम् (डॉ० श्रीसत्यव्रतजी वर्मा)	३७१
१४९-अँगरेज कवियोंका गंगा-प्रेम (श्रीकिशोरीलालजी खन्ना)	३७५
१५०-मुसलिम विद्वानोंकी दृष्टिमें गंगा मइया (श्रीबद्री नारायणजी तिवारी)	३७६
१५१-फारसी कवितामें गंगाका महत्त्व-वर्णन (विद्यासागर श्रीदेवीनारायणजी बी० ए०, एल-एल० बी०)	३७९

विषय	पृष्ठ-संख्या
१५२-'गंग नहाओ' [कविता] (श्रीदेवीचरणजी पाण्डेय 'चरण')	३८०
१५३-योग-साधनामें गंगाका महत्त्व (ब्रह्मचारी श्रीआनन्दजी)	३८१
१५४-जाह्नवीदण्डकम् (आचार्य श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसादजी मिश्र 'विनय')	३८४
लोकसंस्कृतिमें गंगा-दर्शन	
१५५-गंगी संस्कृति (डॉ० श्रीप्रणवदेवजी)	३८५
१५६-भारतीय लोकसंस्कृतिमें गंगा (आचार्य डॉ० श्रीपवनकुमारजी शास्त्री, साहित्याचार्य, विद्यावारिधि, एम०ए०, पी-एच०डी०)	३८७
१५७-लोकमंगलके रंगमें रँग गंगामाता (स्वामी श्रीरामराज्यम्जी)	३९१
१५८-ब्रजमें गंगाजी (श्रीमहावीरसिंहजी यदुवंशी)	३९४
१५९-श्रीक्षेत्रकी पुण्यतोया श्वेतगंगा (डॉ० श्रीयुत श्रीनिवासजी आचार्य, एम० ए०, एम० एड०, पी-एच० डी०)	३९७
१६०-मिथिलाकी परम्परा और संस्कृतिमें गंगा (डॉ० श्रीबासुदेवलाल दासजी एम० ए०, पी-एच० डी०)	४००
१६१-बिहार प्रदेश और पतितपावनी माँ गंगा (डॉ० श्रीराकेशकुमारजी सिन्हा 'रवि')	४०३
१६२-पूर्वाचलके इतिहासमें माँ गंगा (श्रीउमेशप्रसादजी सिंह)	४०६
१६३-माता गंगाका वात्सल्यभाव	४०९
१६४-'काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गंगा मनोहारिणी' (पं० श्रीकृष्णानन्दजी उपाध्याय)	४१०
१६५-शृंगवेरपुरकी गंगा (डॉ० श्रीमती इन्दिरा तिवारी)	४११
१६६-वृद्धगंगा, दक्षिणगंगा तथा गोदावरी (डॉ० श्रीभीमाशंकरजी देशपाण्डे)	४१५
१६७-चित्रोत्पला गंगा (महामण्डलेश्वर राजेश्री डॉ० महन्त श्रीरामसुन्दरदासजी)	४१५
१६८-वैनगंगा (श्री आर०के० श्रीवास्तव, एम०ए०)	४१७
१६९-लोकगीतोंमें गंगा (श्रीकैलाश पंकजजी श्रीवास्तव) ...	४१८
१७०-आधुनिककालके कवियोंकी दृष्टिमें गंगा (श्रीसदाराम सिन्हाजी 'स्नेही')	४२१
१७१-गंगा-अवतरण और ताप्ती माहात्म्य (श्रीमती मेघा ओमजी गुप्ता)	४२२
१७२-गंगापर बंगालके कवि (श्रीआशुतोषजी मुकर्जी)	४२३
१७३-कर्नाटक-साहित्यमें गंगा (श्रीवागीश शिवाचार्यजी) ..	४२४
१७४-शुक-चरणदासीय-सम्प्रदायमें गंगा-माहात्म्य (श्रीब्रजेन्द्रकुमारजी सिंहल)	४२६
१७५-गायत्री महामन्त्रमें सन्निहित शक्ति—'मन्दाकिनी' (पं० श्रीराम शर्माजी आचार्य) [प्रेषिका—सुश्री सुधाजी टण्डन]	४२७

विषय	पृष्ठ-संख्या
------	--------------

१७६- कवि पृथ्वीराज राठौड़विरचित 'भागीरथी रा दूहा' (डॉ० श्रीकृष्णलालजी बिश्नोई)	४२८
१७७- 'गंगास्तुति:' (डॉ० श्रीगुणप्रकाश चैतन्यजी महाराज)..	४३०

गंगोपासना

[क] गंगाकृपाकी अनुभूतियाँ (घटनाएँ)

❖ गंगाजलका प्रभाव (रमेन्द्रप्रसादसिंह 'विद्यार्थी') ...	४३१
❖ गंगामाईकी महिमा (मदनलाल शाण्डिल्य)	४३१
❖ गंगामैयाका आशीर्वाद (चन्द्रभाल)	४३३
❖ गंगामैयाकी कृपा (रामकुमार मण्डल)	४३४
❖ गंगामैयाकी अहैतुकी कृपा (प्रे०—कुँवरानी वेदना सिंह)	४३५
❖ गंगाजलसे मिला जीवनदान (राजेन्द्र अरोरा)	४३६
❖ गंगा माँकी अद्भुत कृपा (मधुबाला मोहता)	४३६
❖ गंगाजलकी महिमा (जीवेशकुमार 'जीवन-ज्योति')	४३७
❖ गंगामाताकी कृपा (बृषभान ओझा)	४३७
❖ गंगाजलसे रोगनाशकी आश्चर्यजनक घटना (कलावती देवी ऐरन)	४३८
❖ गंगाजलका अनोखा प्रभाव (देवेन्द्रपाल गुप्ता)	४३९
❖ जंगलदासपर माता गंगाकी कृपा (अजय कुमार) ...	४३९
❖ गंगास्नानका प्रत्यक्ष फल (रामकिशन गट्टानी)	४४०
❖ गंगाजलका महत्त्व (चतुर्भुज शर्मा 'पंकज')	४४०
❖ शंकरजीको गंगाजलसे स्नान करते ही वर्षा हुई (वल्लभदास बिन्नानी 'ब्रजेश')	४४१
❖ गंगासम्बन्धी मेरी अनुभूति (कार्ष्णि डॉ० श्रीराधेश्यामजी अग्रवाल)	४४२
❖ मृत्युमुखमें पहुँची असाध्य रुग्णाकी जीवन-रक्षा (वेद्य श्रीकृष्ण शर्मा)	४४२
❖ श्रीगंगाजीकी मिट्टीका प्रभाव (श्रीप्रेमशंकरजी शर्मा 'विश्वकर्मा')	४४३
❖ गंगाजलका चमत्कार (श्रीमती शीला अग्रवाल)	४४३
❖ गंगा-तटपर गायत्री-साधनाका प्रत्यक्ष चमत्कार (श्रीमाधवजी चतुर्वेदी)	४४५
❖ गंगामैयाकी सौगन्धका प्रभाव (रामजीलाल गौतम पटवारी)	४४८
❖ श्रीगंगाजीकी दैवी शक्ति (श्रीसुदर्शनसिंहजी 'चक्र') [प्रेषक—श्रीजनार्दनजी पाण्डेय]	४४८
❖ 'औषधं जाह्नवीतोयम्' (विद्याविनोदिनी शान्ति त्रिवेदी)	४४९
❖ माँ गंगाकी कृपा (श्रीनेन्द्रकुमारजी शर्मा)	४५०
❖ माँ गंगासे जुड़ी दिव्य अनुभूतियाँ (साध्वी सुश्री कमलेश भारतीजी)	४५२

विषय	पृष्ठ-संख्या
------	--------------

❖ गंगाजलसे व्याधिनाश (आचार्य श्रीगौरीदत्तजी गहतोड़ी)	४५४
❖ गंगा-महिमा (पं० श्रीशंकरलालजी त्रिवेदी)	४५५

[ख] गंगाभक्तोंके आख्यान

❖ सीताजीकी गंगा-साधना (प्रो० श्रीबालकृष्णजी कुमावत, एम० कॉम, साहित्यरत्न)	४५६
❖ राजा पुण्यकीर्तिकी गंगाभक्ति	४६०
❖ जब गंगाजी स्वयं पधारीं (श्रीअनिलजी पोरवाल) .	४६१
❖ विद्यापतिकी गंगाभक्ति (डॉ० श्रीउदयनाथजी झा 'अशोक')	४६२
❖ बिट्टू मिश्रकी गंगा भक्ति (श्रीनागानन्दजी)	४६४
❖ संत रैदासकी गंगानिष्ठा (श्रीजगदीशचन्द्रजी मेहता, एम० ए० (इतिहास, हिन्दी), बी० एड०)	४६४
❖ 'मैं गंगा हूँ' [कविता] (श्रीगनेशीलालजी शर्मा) ..	४६६
❖ रामकृष्ण-विवेकानन्द-भावधारामें गंगा-प्रेम (डॉ० श्रीसुरेशचन्द्रजी शर्मा)	४६७
❖ गंगाके परम भक्त—स्वामी रामतीर्थ (डॉ० श्रीविद्यानन्दजी 'ब्रह्मचारी', एम० ए० (द्वय), बी० एड०, पी-एच० डी०, डी० लिट०)	४६८
❖ गंगाभक्त महाकवि पद्माकर (श्रीकैलाश पंकजजी श्रीवास्तव)	४७२
❖ गंगाके वरद पुत्र—'नन्हें' (श्रीलालबहादुर शास्त्री) (श्रीशोभानाथजी त्रिपाठी)	४७२
❖ गुमानिकी गंगा (डॉ० श्रीबसन्तबल्लभजी भट्ट, एम० ए०, पी-एच० डी०)	४७३
❖ भगवद्भक्तोंपर गंगाका वात्सल्य (डॉ० श्रीसत्येन्दुजी शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०)	४७५

[ग] गंगा-सपर्या

❖ गंगादशहरा	४७९
❖ गङ्गादशहरास्तोत्रम्	४८०
❖ मन्त्रमहोदधिमें प्राप्त गंगोपासनाका स्वरूप	४८२
❖ गंगासप्तमी (डॉ० श्रीकृष्णपालजी त्रिपाठी)	४८३
❖ श्रीगङ्गाष्टकम्	४८४
❖ गङ्गादि तीर्थस्थानोंमें करणीय कल्याणकारी तीर्थश्राद्ध (पं० श्रीबालकृष्णजी कौशिक)	४८५
❖ गंगाजीका अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र तथा उसका माहात्म्य .	४८८
❖ काशीका गंगामहोत्सव (श्रीचन्द्रदेवजी मिश्र, एम० ए०, बी० एड)	४९०
❖ गंगापूजनकी विधि	४९२
❖ जह्नुमुनिद्वारा की गयी गंगा-प्रार्थना	४९६
❖ नम्र निवेदन एवं क्षमा-प्रार्थना	४९७

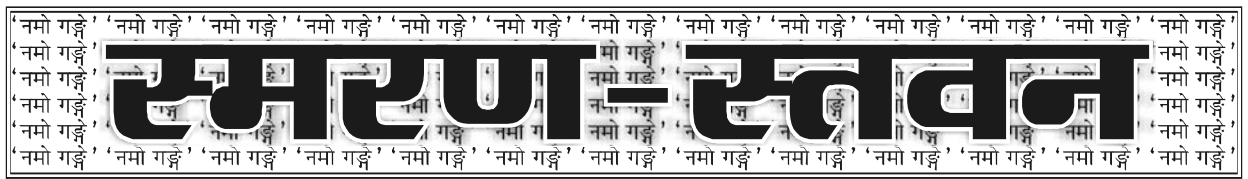
चित्र-सूची

(रंगीन चित्र)

१- जगज्जननी भगवती गंगा.....	आवरण-पृष्ठ	६- गंगातटवर्ती तीर्थस्थल	७
२- गंगा-अवतरण	३	७- नारदजी और गंगाजीद्वारा भीष्म-परशुरामको युद्धसे रोकना..	८
३-४- पारम्परिक भारतीय लघु चित्रकलामें भगवती गंगाके		८- पुत्रशोकसे व्याकुल गंगाजीको श्रीकृष्ण एवं	
स्वरूपका अंकन (१-२)	४-५	व्यासजीद्वारा सान्त्वना	९
५- हिमालय-क्षेत्रके गंगातीर्थ	६	९- माँ गंगाद्वारा राजर्षि भगीरथका अनुगमन.....	१०

(सादे चित्र)

१- मकरवाहिनी भगवती भागीरथी	३१	३८- दक्षिणेश्वर	२७०
२- राजर्षि भगीरथका राज्याभिषेक	४४	३९- डायमण्डहारबर	२७१
३- गंगातटपर दान देते राजा भगीरथ	४९	४०- भगीरथकी तपस्यासे गंगाजीका पृथ्वीपर अवतरण	२८९
४- अपमृत्युका नाशक गंगाजल	५१	४१- टिहरी बाँधके दो दृश्य	२९३
५- गंगातटपर यज्ञ, दान, तर्पण तथा स्नान करते श्रद्धालु....	६५	४२- उत्तराखण्डकी गंगा नदीघाटीमें जलविद्युत्-परियोजनाएँ	२९४
६- मकरवाहिनी श्रीगंगाजी	१७२	४३- भगीरथ-त्रितल-संवाद	३३३
७- गंगाजीको रोकते महाराज शान्तनु	१७३	४४- भगीरथकी तपस्या	३३३
८- रासमण्डलमें गायन करते भगवान् शंकर	१८२	४५- गंगा एवं यमुनाकी मृण्मय मूर्तियाँ	३६२
९- राधाजीकी स्तुति करते त्रिदेव	१८४	४६- मकरवाहिनी गंगा	३६२
१०- गंगा, सरस्वती एवं लक्ष्मीजीको आदेश देते भगवान् विष्णु..	१८६	४७- नदीरूपा गंगा-यमुनाका संगम एवं सागरसे मिलन	३६३
११- कपिलमुनिकी शापाग्निमें भस्म होते सगरपुत्र.....	१८८	४८- गंगा-यमुनाके जलसे अभिषिक्त गजलक्ष्मी	३६४
१२- यमदूतोंको गंगाजीकी महिमा बताते धर्मराज	१९४	४९- त्रिपथगा गंगा	३६४
१३- गौतममुनिपर भगवान् शंकरकी कृपा	१९९	५०- त्रिपथगा गंगा	३६४
१४- भगवती गंगा, शान्तनु और बालक देवव्रत (भीष्म)	२००	५१- गंगाधर शिव	३६४
१५- ब्रह्माजीके कमण्डलुसे अवतरित विष्णुपदी श्रीगंगाजी...	२०१	५२- शिवकी जटाओंमें स्वर्गसे उतरती गंगाके दो दृश्य	३६५
१६- वैकुण्ठलोकमें भगवान् शंकरका गायन	२०१	५३- समुद्रगुप्तकालीन स्वर्ण-सिक्केपर गंगाजी	३६६
१७- भगवान् विष्णुके पदनखसे निर्गत गंगाजी	२१०	५४- कुमारगुप्त (प्रथम)-के स्वर्ण-सिक्केपर गंगाजी	३६६
१८- तीर्थराज प्रयागमें गंगा और यमुनाजीका संगम	२२७	५५- कुमारगुप्त (प्रथम)-के स्वर्ण-सिक्केपर गंगाजी	३६७
१९- नन्दादेवी पर्वत	२२९	५६- बलिद्वारा वामनभगवान्का पूजन	३९१
२०- त्रिशूल पर्वत	२३०	५७- विराट् रूपमें वामनभगवान्	३९२
२१- देवप्रयाग	२३६	५८- भगवान् स्कन्दद्वारा गंगामाहात्म्य-वर्णन	३९४
२२- रुद्रप्रयाग	२३७	५९- मानसी गंगा	३९५
२३- कर्णप्रयाग	२३८	६०- नर-नारायणकी तपस्या भंग करनेके लिये अप्सराओंका आना.	३९६
२४- नन्दप्रयाग	२३८	६१- श्वेतकी तपस्यासे उमा-महेश्वरका प्राकट्य	३९७
२५- विष्णुप्रयाग	२३९	६२- बिहारकी सोन नदी	४०४
२६- गोमुखसे गंगासागरतक गंगाजीके प्रवाहमार्गका मानचित्र	२४३	६३- गंगा और गायत्री	४२७
२७- लक्ष्मण झूला	२४६	६४- भगवान् रामका लक्ष्मण और सीताजीके साथ गंगापार जाना.	४५६
२८- दक्ष प्रजापतिका मन्दिर	२४७	६५- भक्त जयदेवजी	४६१
२९- मुकेश्वर महादेव	२४९	६६- मैथिल-कोकिल महाकवि विद्यापति	४६२
३०- कर्णशिला	२५१	६७- संत रैदास	४६४
३१- काँचका मन्दिर	२५४	६८- स्वामी रामकृष्ण परमहंस	४६७
३२- रामेश्वरका मन्दिर	२५५	६९- स्वामी रामतीर्थ	४६८
३३- भरद्वाज आश्रम	२५९	७०- श्रीलालबहादुर शास्त्री	४७२
३४- विन्ध्यवासिनी माता	२६०	७१- तैलंग स्वामी	४७७
३५- काशी	२६२	७२- गंगा-पूजन-यन्त्र	४८२
३६- अजगवीनाथ	२६६	७३- देवदीपावलीके अवसरपर गंगामें दीपदान	४९१
३७- हावड़ा ब्रिज	२७०	७४- भगवती श्रीगंगाजी	४९२



श्रुतिसरिता

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति
शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तया-

जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥

हे गंगे! हे यमुने! हे सरस्वति! हे शुतुद्रि! हे परुष्णि! असिक्नीसहित हे मरुद्वृधे! वितस्ता तथा सुषोमानदीसे समृद्ध हे आर्जीकीये! आप सभी सर्वदा स्तवनीय हैं। हे नदीस्वरूपा देवियो! मेरे द्वारा की जानेवाली स्तुतियोंका कृपया आप श्रवण करें। [ऋग्वेद]

या प्रवतो निवत उद्वत उदन्वतीरनुदकाश्च
याः। ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः शिवा
देवीरशिपदा भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु ॥

जो नदियाँ दुर्गम भूभागोंमें बहा करती हैं, जो भूमिके अन्तस्तलमें संचरण करती हैं, जिन नदियोंका प्रवाह पार्वत्य-प्रदेशोंके उच्चतम भूभागोंको आप्लावित करता है, जो नदियाँ नित्यसलिला हैं और जो अन्तः-सलिला प्रतीत होती हैं, वे दिव्यकान्तिमयी तथा अपने पीयूषोपम जलसे जगत्को आप्लावित करनेवाली सरिताएँ शिपद आदि विभिन्न रोगोंको दूर करती हुई सर्वदा हमें कल्याण तथा संरक्षण प्रदान करें। [ऋग्वेद]

सितासिते सरिते यत्र सङ्गथे

तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति।

ये वै तन्वं विसृजन्ति धीरा-

स्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते ॥

जिस तीर्थमें गंगा और यमुना—इन दोनों नदियोंका संगम हुआ है, उस तीर्थमें स्नान करनेवाले प्राणी देवलोककी प्राप्ति करते हैं और जो वहाँ शरीरका त्याग करते हैं, वे धीरपुरुष अमृतत्व अर्थात् मोक्षको प्राप्त करते हैं। [ऋग्वेदपरिशिष्ट]

हिमवतः प्र स्रवन्ति सिन्धौ समह सङ्गमः।

आपो ह मह्यं तद् देवीर्ददन् हृद्द्योतभेषजम् ॥

हिममण्डित पर्वतशिखरोंसे द्रवित होती हुई अविरल शीतल जलधाराएँ सागरमें विलीन हो रही हैं। वे सतत गतिशील तथा शैत्यवाहिनी जलधाराएँ उपासकोंके अन्तस्तापका परिशमन करनेवाली ओषधियाँ प्रदान करें। [अथर्ववेद]

सिन्धुपत्नीः सिन्धुगङ्गीः सर्वा या नद्य स्थन।

दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै ॥

हे जलाधिदेवियो! आप सभी जलाधिपति महासिन्धुकी कान्ताएँ हैं, आप सन्तापतप्त लोकमानसके तापोपशमनार्थ निरन्तर गतिशील रहती हैं, आधि-व्याधिसे सन्तप्त हम उपासकोंको आप करुणावारिरूप ओषधियोंसे नैरुज्य प्रदान करें, जिससे आपके प्रीतिपात्र हम उपासक अन्न-पानादिका यथेष्ट उपभोग करनेमें समर्थ हो सकें।

[अथर्ववेद]

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका

यासु जातः सविता यास्वग्निः।

या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णा-

स्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ॥

मंगलमय, आह्लादक तथा स्वर्णिम कान्तिवाला यह जल स्वभावतः शुद्ध होनेसे स्नान-आचमन-पानादिके माध्यमसे उपासकोंको पवित्रता प्रदान करनेवाला है। यह जल सूर्य तथा अग्नि-जैसे विशोधकोंका भी परमकारण होनेसे पावनतम (पवित्रतम) है। ऐसा वह जगत्पावन, अग्निगर्भ वारि हम उपासकोंकी समस्त व्याधियोंका शमनकर परमशान्ति तथा सौख्य प्रदान करे। [अथर्ववेद]

श्रीगङ्गाजीके विविध ध्यान-स्वरूप

मकरवाहिनी श्रीगंगा

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां

करधृतकलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टाम् ।

विधिहरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां

कलितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ॥

श्वेत मकरपर विराजित, शुभ्रवर्णवाली, तीन नेत्रोंवाली, दो हाथोंमें भरे हुए कलश तथा दो हाथोंमें सुन्दर कमल धारण किये हुए, भक्तोंके लिये परम इष्ट; ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश तीनोंका रूप अर्थात् तीनोंके कार्य करनेवाली, मस्तकपर सुशोभित चन्द्रजटित मुकुटवाली तथा सुन्दर श्वेत वस्त्रोंसे विभूषित माँ गंगाको मैं प्रणाम करता हूँ।

देवनदी श्रीगंगा

ब्रह्माण्डं खण्डयन्ती हरशिरसि जटावल्लिमुल्लासयन्ती

स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्खलन्ती ।

क्षोणीपृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूर्निर्भरं भर्त्सयन्ती

पाथोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरित्पावनी नः पुनातु॥

ब्रह्माण्डका भेदनकर निकलनेवाली, महादेवजीकी जटा-लताको उल्लसित करनेवाली, स्वर्गलोकसँ गिरनेवाली, सुमेरुकी गुफा और पर्वतमालासँ अवतरित होनेवाली, पृथ्वीपर विहार करनेवाली, पापसमूहकी सेनाको कड़ी फटकार देनेवाली, समुद्रको भरनेवाली तथा देवपुरीकी पवित्र नदी गंगा हमें पवित्र करे।

[गंगाष्टक]

चतुर्भुजादेवी गंगा

चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च सर्वावयवभूषिताम् ।

रत्नकुम्भां सिताम्भोजां वरदामभयप्रदाम् ॥

श्वेतवस्त्रपरीधानां मुक्तामणिविभूषिताम् ।

सदा ध्यायेत् सुरूपां तां चन्द्रायुतसमप्रभाम् ॥

श्रीगंगाजीकी चार भुजाएँ हैं। उनके तीन नेत्र हैं। उनके सम्पूर्ण अंग सुन्दर हैं तथा आभूषणोंसे सुशोभित हो रहे हैं। वे एक हाथमें [जलपूरित] रत्नघट, दूसरे हाथमें श्वेतपद्म, तीसरे हाथमें वरद मृदा एवं चौथेमें

अभय मुद्रा धारण किये हैं। वे उज्ज्वल वस्त्र धारण करती हैं और मणि तथा मोतियोंसे सुशोभित हैं। उनमें हजारों चन्द्रमाओंकी ज्योति छिटक रही है। [भक्तको] सदा उनके इस प्रकारके सुन्दर रूपका ध्यान करना चाहिये। [भविष्यपुराण]

धर्मद्रवरूपा भगवती गंगा

साक्षाद्धर्मद्रवौघं मुररिपुचरणाम्भोजपीयूषसारं

दुःखस्याब्धेस्तरित्रं सुरदनुजनुतं स्वर्गसोपानमार्गम् ।

सर्वाहोहारि वारि प्रवरगुणगणं भासि या संवहन्ती

तस्यै भागीरथि श्रीमति मुदितमना देवि कुर्वे नमस्ते ॥

श्रीमती भागीरथी देवी ! जो जलरूपमें परिणत साक्षात् धर्मकी राशि है, भगवान् विष्णुके चरणारविन्दोंसे प्रकट हुई सुधाका सार है, दुःखरूपी समुद्रसे पार होनेके लिये जहाज है तथा स्वर्गलोकमें जानेके लिये सीढ़ी है, जिसे देवता और दानव भी प्रणाम करते हैं, जो समस्त पापोंका संहार करनेवाला, उत्तम गुणसमूहसे युक्त और शोभासम्पन्न है, ऐसे जलको आप धारण करती हैं। मैं प्रसन्नचित्त होकर आपको नमस्कार करता हूँ। [संकलित]

भगवती भागीरथी

उत्फुल्लामलपुण्डरीकरुचिरा कृष्णेशविध्यात्मिका

कुम्भेष्टाभयतोयजानि दधती श्वेताम्बरालङ्कृता ।

हृष्टास्या शशिशेखराखिलनदीशोणादिभिः सेविता

ध्येया पापविनाशिनी मकरगा भागीरथी साधकैः॥

जिनकी देहकान्ति खिले हुए स्वच्छ कमलके समान मनोहारिणी है, जो ब्रह्म-विष्णु-रुद्रस्वरूपिणी हैं, जिन्होंने दाहिने भुजयुगलमें वरमुद्रा तथा कमल और वाम भुजयुगलमें सुधाकलश तथा अभय मुद्राको धारण किया है, जो श्वेत वस्त्रोंसे अलंकृत हैं, जिनके मस्तकपर चन्द्रमा शोभायमान है तथा समस्त नदियाँ और शोण आदि महानद जिनकी सेवा कर रहे हैं, ऐसी प्रसन्न मुखवाली तथा मकरपर आरूढ़, पापविनाशिनी भगवती भागीरथीका साधकोंको ध्यान करना चाहिये।

श्रीवाल्मीकिविरचित गङ्गाष्टक

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
 स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये ।
 त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
 स्तवन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः ॥ १ ॥
 त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो वरं
 त्वन्तीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः ।
 नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टघण्टारण-
 त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ॥ २ ॥
 उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
 वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः ।
 न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्राणमिश्रं
 वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः ॥ ३ ॥
 काकैर्निष्कृषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिलृण्ठितं
 स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम् ।
 दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमानः कदा
 द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः ॥ ४ ॥

पृथ्वीकी शृङ्गारमाला, पार्वतीजीकी सपत्नी और स्वर्गारोहणके लिये वैजयन्ती पताकारूपिणी हे माता भागीरथि ! मैं तुमसे यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे तटपर निवास करते हुए, तुम्हारे जलका पान करते हुए, तुम्हारी तरंगभङ्गीमें तरंगायमान होते हुए, तुम्हारा नामस्मरण करते हुए और तुम्हींमें दृष्टि लगाये हुए मेरा शरीरपात हो ॥ १ ॥ हे गङ्गे ! तुम्हारे तटवर्ती तरुवरके कोटरमें पक्षी होकर रहना अच्छा है तथा हे नरकनिवारिणि ! तुम्हारे जलमें मत्स्य या कच्छप होकर जन्म लेना भी बहुत अच्छा है, किंतु दूसरी जगह मदमत्त गजराजोंके जमघटके घण्टारवसे भयभीत हुई शत्रुमहिलाओंसे स्तुत पृथ्वीपति भी होना अच्छा नहीं ॥ २ ॥ हे मातः ! मैं भले ही आपके आरपार रहनेवाला जन्म-मरणरूप क्लेशको सहन न करनेवाला कोई बैल, पक्षी, घोड़ा, सर्प अथवा हाथी हो जाऊँ, किंतु [आपसे दूर] किसी अन्य स्थानपर ऐसा राजा भी न होऊँ, जिसपर वारांगनाएँ मन्द-मन्द झनकारते हुए कंकणोंकी सुमधुर ध्वनिसे युक्त चमर डुला रही हों ॥ ३ ॥ हे परमेश्वरि ! हे त्रिपथगे ! हे भागीरथि ! [मरनेके अनन्तर] देवांगनाओंके करकमलोंमें सुशोभित सुन्दर चमरोंकी हवासे सेवित हुआ मैं अपने मृत शरीरको काकोंसे कुरेदा जाता हुआ, कुत्तोंसे भक्षित होता हुआ, गीदड़ोंसे लुण्ठित होता हुआ, तुम्हारे स्रोतमें पड़कर बहता हुआ, कभी किनारेके स्वल्प जलमें हिलता हुआ और फिर तरंगभङ्गियोंसे आन्दोलित होता हुआ भी क्या कभी देखूँगा ? ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अभिनवबिसवल्ली

पादपद्मस्य

विष्णो-

मदनमथनमौलेर्मालतीपुष्पमाला

1

जयति

जयपताका

काप्यसौ

मोक्षलक्ष्म्याः

क्षपितकलिकलङ्का

जाह्नवी

नः

पुनातु ॥ ५ ॥

एतत्तालतमालसालसरलव्यालोलवल्लीलता-

चछन्नं

सूर्यकरप्रतापरहितं

शङ्खेन्दुकुन्दोज्ज्वलम् ।

गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधूत्तुङ्गस्तनास्फालितं

स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम् ॥ ६ ॥

गाङ्गं

वृत्तिः

मनोहारि

मुरारिचरणच्युतम् ।

त्रिपुरारिशिरश्चारि

पापहारि

पुनात

माम् ॥ ७ ॥

पापापहारि

दरितारि

तरङ्गधारि

शैलप्रचारि

गिरिराजगहाविदारि ।

झङ्कारकारि

हरिपादरजोऽपहारि

गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि ॥ ८ ॥

गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः ।

प्रक्षाल्य गात्रकलिकल्मषपङ्कुमाशु मोक्षं लभेत् पतति नैव नरो भवाब्धौ ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमहर्षिवाल्मीकिविरचितं श्रीगङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

जो भगवान् विष्णुके चरणकमलका नूतनमृणाल (कमलनाल) है तथा कामारि त्रिपुरारिके ललाटकी मालती-माला है, वह मोक्षलक्ष्मीकी विलक्षण विजयपताका जयको प्राप्त हो। कलिकलंकको नष्ट करनेवाली, वह जाह्नवी हमें पवित्र करे ॥ ५ ॥ जो ताल, तमाल, साल, सरल तथा चंचल वल्लरी और लताओंसे आच्छादित है, सूर्यकिरणोंके तापसे रहित है, शंख, कुन्द और चन्द्रके समान उज्ज्वल है तथा गन्धर्व, देवता, सिद्ध और किन्नरोंकी कामिनियोंके पीन पयोधरोंसे आस्फालित (टकराया हुआ) है, वह अत्यन्त निर्मल गंगाजल नित्यप्रति मेरे स्नानके लिये हो ॥ ६ ॥ जो श्रीमुरारिके चरणोंसे उत्पन्न हुआ है, श्रीशंकरके सिरपर विराजमान है तथा सम्पूर्ण पापोंको हरण करनेवाला है, वह मनोहर गंगाजल मुझे पवित्र करे ॥ ७ ॥ जो पापोंको हरण करनेवाला, दुष्कर्मोंका शत्रु, तरंगमय, शैल-खण्डोंपर बहनेवाला, पर्वतराज हिमालयकी गुहाओंको विदीर्ण करनेवाला, मधुर कलकल-ध्वनियुक्त और श्रीहरिकी चरणरजको धोनेवाला है, वह निरन्तर शुभकारी गंगाजल मुझे पवित्र करे ॥ ८ ॥ जो पुरुष वाल्मीकिजीके रचे हुए इस कल्याणप्रद गंगाष्टकको प्रातःकाल एकाग्रचित्तसे पढ़ता है, वह अपने शरीरके कलिकल्मषरूप कीचड़को धोकर शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त करता है और फिर संसार-समुद्रमें नहीं गिरता ॥ ९ ॥

॥ इस प्रकार श्रीमहर्षिवाल्मीकिविरचित श्रीगङ्गाष्टक सम्पूर्ण हुआ ॥

श्रीशङ्कराचार्यकृत गङ्गास्तुति

देवि सुरेश्वरि भगवति गङ्गे त्रिभुवनतारिणि तरलतरङ्गे ।
 शङ्करमौलिविहारिणि विमले मम मतिरास्तां तव पदकमले ॥ १ ॥
 भागीरथि सुखदायिनि मातस्तव जलमहिमा निगमे ख्यातः ।
 नाहं जाने तव महिमानं पाहि कृपामयि मामज्ञानम् ॥ २ ॥
 हरिपदपाद्यतरङ्गिणि गङ्गे हिमविधुमुक्ताधवलतरङ्गे ।
 दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं कुरु कृपया भवसागरपारम् ॥ ३ ॥
 तव जलममलं येन निपीतं परमपदं खलु तेन गृहीतम् ।
 मातर्गङ्गे त्वयि यो भक्तः किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ॥ ४ ॥
 पतितोद्धारिणि जाह्नवि गङ्गे खण्डितगिरिवरमण्डितभङ्गे ।
 भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये ॥ ५ ॥
 कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके ।
 पारावारविहारिणि गङ्गे विमुखयुवतिकृततरलापाङ्गे ॥ ६ ॥
 तव चेन्मातः स्रोतःस्नातः पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः ।
 नरकनिवारिणि जाह्नवि गङ्गे कलुषविनाशिनि महिमोत्तुङ्गे ॥ ७ ॥

हे देवि गङ्गे! तुम देवगणकी ईश्वरी हो, हे भगवति! तुम त्रिभुवनको तारनेवाली, विमल और तरल तरंगमयी तथा शंकरके मस्तकपर विहार करनेवाली हो। हे मातः! तुम्हारे चरणकमलोंमें मेरी मति लगी रहे ॥ १ ॥ हे भागीरथि! तुम सब प्राणियोंको सुख देती हो, हे मातः! वेद-शास्त्रमें तुम्हारे जलका माहात्म्य वर्णित है, मैं तुम्हारी महिमा कुछ नहीं जानता, हे दयामयि! मुझ अज्ञानीकी रक्षा करो ॥ २ ॥ हे गङ्गे! तुम श्रीहरिके चरणोंकी चरणोदकमयी नदी हो, हे देवि! तुम्हारी तरंगें हिम, चंद्रमा और मोतीकी भाँति श्वेत हैं, तुम मेरे पापोंका भार दूर कर दो और कृपा करके मुझे भवसागरके पार उतारो ॥ ३ ॥ हे देवि! जिसने तुम्हारा जल पी लिया, अवश्य ही उसने परमपद पा लिया, हे मातः गङ्गे! जो तुम्हारी भक्ति करता है, उसको यमराज नहीं देख सकते (अर्थात् तुम्हारे भक्तगण यमपुरीमें न जाकर वैकुण्ठमें जाते हैं) ॥ ४ ॥ हे पतितजनोंका उद्धार करनेवाली जह्नुकुमारी गङ्गे! तुम्हारी तरंगें गिरिराज हिमालयको खंडित करके बहती हुई सुशोभित होती हैं, तुम भीष्मकी जननी और जह्नुमुनिकी कन्या हो, पतितपावनी होनेके कारण तुम त्रिभुवनमें धन्य हो ॥ ५ ॥ हे मातः! तुम इस लोकमें कल्पलताकी भाँति फल प्रदान करनेवाली हो, तुम्हें जो प्रणाम करता है, वह कभी शोकमें नहीं पड़ता, हे गङ्गे! मानिनी वनिताके समान चंचल कटाक्षवाली तुम समुद्रके साथ विहार करती हो ॥ ६ ॥ हे गङ्गे! जिसने तुम्हारे प्रवाहमें स्नान कर लिया, वह फिर मातृगर्भमें प्रवेश नहीं करता, हे जाह्नवि! तुम भक्तोंको नरकसे बचाती हो और उनके पापोंका नाश करती हो, तुम्हारा माहात्म्य अतीव उच्च है ॥ ७ ॥

Hinduism Discord Server <https://discord.gg/dharma> | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sh

श्रीतुलसीदासजीकी गंगा-प्रार्थना

जय जय भगीरथनन्दिनि, मुनि-चय चकोर-चन्दिनि, नर-नाग-बिबुध-बन्दिनि जय जह्नु बालिका ।
 बिस्नु-पद-सरोजजासि, ईस-सीसपर बिभासि, त्रिपथगासि, पुन्यरासि, पाप-छालिका ॥ १ ॥
 बिमल बिपुल बहसि बारि, सीतल त्रयताप-हारि, भँवर बर बिभंगतर तरंग-मालिका ।
 पुरजन पूजोपहार, सोभित ससि धवलधार, भंजन भव-भार, भक्ति-कल्पथालिका ॥ २ ॥
 निज तटबासी बिहंग, जल-थर-चर पसु-पतंग, कीट, जटिल तापस सब सरिस पालिका ।
 तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुबंस-बीर, बिचरत मति देहि मोह-महिष-कालिका ॥ ३ ॥

हे भगीरथनन्दिनी ! तुम्हारी जय हो, जय हो । तुम मुनियोंके समूहरूपी चकोरोंके लिये चन्द्रिकारूप हो । मनुष्य, नाग और देवता तुम्हारी वन्दना करते हैं । हे जह्नुकी पुत्री ! तुम्हारी जय हो । तुम भगवान् विष्णुके चरणकमलसे उत्पन्न हुई हो; शिवजीके मस्तकपर शोभा पाती हो; स्वर्ग, भूमि और पाताल—इन तीन मार्गोंसे तीन धाराओंमें होकर बहती हो । पुण्योंकी राशि और पापोंको धोनेवाली हो ॥ १ ॥

तुम अगाध निर्मल जलको धारण किये हो, वह जल शीतल और तीनों तापोंको हरनेवाला है । तुम सुन्दर भँवर और अति चंचल तरंगोंकी माला धारण किये हो । नगर-निवासियोंने पूजाके समय जो सामग्रियाँ भेंट चढ़ायी हैं, उनसे तुम्हारी चन्द्रमाके समान धवल धारा शोभित हो रही है । वह धारा संसारके जन्म-मरणरूप भारको नाश करनेवाली तथा भक्तिरूपी कल्पवृक्षकी रक्षाके लिये थालहारूप है ॥ २ ॥

तुम अपने तीरपर रहनेवाले पक्षी, जलचर, थलचर, पशु, पतंग, कीट और जटाधारी तपस्वी आदि सबका समानभावसे पालन करती हो । हे मोहरूपी महिषासुरको मारनेके लिये कालिकारूप गङ्गाजी ! मुझ तुलसीदासको ऐसी बुद्धि दो कि जिससे वह श्रीरघुनाथजीका स्मरण करता हुआ तुम्हारे तीरपर विचरा करे ॥ ३ ॥ [विनय-पत्रिका]

श्रीगंगाजीकी आरती

जय गंगा मैया-माँ जय सुरसरि मैया ।

भव-वारिधि उद्धारिणि अतिहि सुदृढ़ नैया ॥

हरि-पद-पद्म-प्रसूता विमल वारिधारा ।

ब्रह्मद्रव भागीरथि शुचि पुण्यागारा ॥

शंकर-जटा विहारिणि हारिणि त्रय-तापा ।

सगर-पुत्र-गण-तारिणि, हरणि सकल पापा ॥

‘गंगा-गंगा’ जो जन उच्चारत मुखसों ।

दूर देशमें स्थित भी तुरत तरत सुखसों ॥

मृतकी अस्थि तनिक तुव जल-धारा पावै ।

सो जन पावन होकर परम धाम जावै ॥

तव तटबासी तरुवर, जल-थल-चरप्राणी ।

पक्षी-पशु-पतंग गति पावैं निर्वाणी ॥

मातु! दयामयि कीजै दीननपर दाया ।

प्रभु-पद-पद्म मिलाकर हरि लीजै माया ॥

जिस दिन गंगाका स्मरण नहीं किया जाता है, वही दिन दुर्दिन है। मेघाच्छन्न दिन दुर्दिन नहीं है। [महाभागवत]

श्रीगंगाजीके दर्शनकरानेका फल

गंगाको उद्देश्य करके यात्रा करनेका फल

गङ्गामुद्दिश्य यो गच्छेन्नरः प्रयतमानसः ।
पदे पदेऽश्वमेधः स्याद्वाजपेयशतं तथा ॥
नृत्यन्ति पितरः सर्वे गङ्गामुद्दिश्य गच्छताम् ।
पापानि प्रपलायन्ते गर्हितान्यपि दूरतः ॥
गङ्गामुद्दिश्य सङ्गच्छन् श्रान्तो यस्य जलं पिबेत् ।
कूपवापीतडागानां तस्य भाग्यं महत्तरम् ॥

[महादेवजी कहते हैं—] हे नारद ! जो विशुद्धात्मा मनुष्य गंगा-स्नानको उद्देश्य करके यात्रा करता है, उसे पग-पगपर अश्वमेध तथा सैकड़ों वाजपेय यज्ञका फल प्राप्त होता है। गंगास्नानके निमित्त जानेवाले मनुष्यके सभी पितरगण प्रसन्न होकर नाचने लगते हैं और उसके महानिन्दनीय पाप भी दूरसे ही भाग जाते हैं। गंगाको उद्देश्य करके जानेवाला थका हुआ मनुष्य जिसके कुएँ, बावली या सरोवरका जल पी लेता है, उस मनुष्यका महान् भाग्य समझना चाहिये। [महाभागवत]

श्रीगंगाजीके दर्शनका फल

गङ्गादर्शनमात्रेण ब्रह्महापि नरः क्षणात् ।
मुच्यते घोरपापेभ्यो मुने नास्त्यत्र संशयः ॥
दर्शनात्कृतकृत्याश्च गङ्गायाः सर्वदेवताः ।
ऋषयश्च महात्मानो मानवानां तु का कथा ॥
सम्पर्केणापि यो गङ्गां सम्पश्यति महामते ।
न सोऽपि यमदण्ड्यः स्यात्कृतपापसहस्रकः ॥

[श्रीमहादेवजी नारदजीसे कहते हैं—] हे मुने ! ब्रह्महत्या करनेवाला मनुष्य भी गंगाके दर्शनमात्रसे क्षणभरमें घोर पापोंसे मुक्त हो जाता है, इसमें संशय नहीं है। भगवती गंगाके दर्शनसे सभी देवता, ऋषिगण तथा महात्मा भी कृतकृत्य होते हैं, फिर मनुष्योंका क्या कहना ? हे महामते ! जो मनुष्य सम्पर्कसे भी भगवती गंगाका दर्शन प्राप्त कर लेता है, हजारों पाप करनेवाला होनेपर भी वह यमदण्डका भागी नहीं होता। [महाभागवत]

दूताः पश्यन्ति ये गङ्गां सम्पर्केणातिपावनीम् ।

न ते कदाचिन्मे दण्ड्या अपि पापशतैर्युताः ॥

[धर्मराज अपने दूतोंसे कहते हैं—] हे दूतो !

जिन्हें दूसरोंके सम्पर्कसे अनायास अतिपावनी भगवती गंगाका दर्शन हो जाता है, वे सैकड़ों पापोंसे युक्त रहनेपर भी मेरे द्वारा कभी दण्डित नहीं किये जाते। [महाभागवत]

वाङ्मनःकर्मजैर्ग्रस्तः पापैरपि पुमानिह ।

वीक्ष्य गङ्गां भवेत्पूतो अत्र मे नास्ति संशयः ॥

मन, वाणी और क्रियाद्वारा होनेवाले पापोंसे ग्रस्त मनुष्य भी गंगाजीका दर्शन करनेमात्रसे पवित्र हो जाता है, इसमें मुझे संशय नहीं है। [महाभारत]

नारण्यैर्नष्टविषयैर्न सुतैर्न धनागमैः ।

तथा प्रसादो भवति गङ्गां वीक्ष्य यथा भवेत् ॥

पूर्णमिन्दुं यथा दृष्ट्वा नृणां दृष्टिः प्रसीदति ।

तथा त्रिपथगां दृष्ट्वा नृणां दृष्टिः प्रसीदति ॥

गंगाजीके दर्शनसे [गंगाजीमें भक्ति रखनेवाले पुरुषको] जितनी प्रसन्नता होती है, उतनी वनके दर्शनोंसे, अभीष्ट विषयसे, पुत्रोंसे तथा धनकी प्राप्तिसे भी नहीं होती। जैसे पूर्ण चन्द्रमाका दर्शन करके मनुष्योंकी दृष्टि प्रसन्न हो जाती है, वैसे ही त्रिपथगा गंगाका दर्शन करके मनुष्योंके नेत्र आनन्दसे खिल उठते हैं। [महाभारत]

दर्शनात् स्पर्शनात् पानात्तथा गङ्गेति कीर्तनात् ।

पुनाति पुण्यपुरुषान् शतशोऽथ सहस्रशः ॥

जो मानव गंगाका दर्शन, स्पर्श, जलपान अथवा 'गङ्गा' इस नामका कीर्तन करता है, वह अपनी सैकड़ों-हजारों पीढ़ियोंके पुरुषोंको पवित्र कर देता है। [अग्नि०]

श्रीगंगाजीका दर्शन करानेका फल

इयं गङ्गेति नियतं प्रतिष्ठा गुह्यस्य रुक्मस्य च गर्भयोषा ।

प्रातस्त्रिवर्गा घृतवहा विषाप्मा गङ्गावतीर्णा वियतो विश्वतोया ॥

'ये गंगाजी हैं'—ऐसा कहकर जो दूसरे मनुष्योंको उनका दर्शन कराता है, उसके लिये भगवती भागीरथी सुनिश्चित प्रतिष्ठा (अक्षय पद प्रदान करनेवाली) हैं। वे कार्तिकेय और सुवर्णको अपने गर्भमें धारण करनेवाली, पवित्र जलकी धारा बहानेवाली और पाप दूर करनेवाली हैं। वे आकाशसे पृथ्वीपर उतरी हुई हैं। उनका जल सम्पूर्ण विश्वके लिये पीनेयोग्य है। उनमें प्रातःकाल स्नान करनेसे धर्म, अर्थ और काम—तीनों वर्गोंकी सिद्धि होती है। [महाभारत]

श्रीगंगाजीके स्पर्शका फल

गङ्गोर्मिभिरथो दिग्धः पुरुषं पवनो यदा ।

स्पृशते सोऽस्य पाप्मानं सद्य एवापकर्षति ॥

गंगाकी तरंगमालाओंसे भीगकर बहनेवाली वायु जब मनुष्यके शरीरका स्पर्श करती है, उसी समय वह उसके सारे पापोंको नष्ट कर देती है । [महाभारत]

सप्तावरान् सप्त परान् पितृस्तेभ्यश्च ये परे ।

पुमांस्तारयते गङ्गां वीक्ष्य स्पृष्ट्वावगाह्य च ॥

गंगाजीका दर्शन, उनके जलका स्पर्श तथा उस जलके भीतर स्नान करके मनुष्य सात पीढ़ी पहलेके पूर्वजोंका और सात पीढ़ी आगे होनेवाली संतानोंका तथा इनसे भी ऊपरके पितरों और संतानोंका उद्धार कर देता है । [महाभारत]

श्रीगंगाजीको प्रणाम करनेका फल

आगत्य प्रणमेद्देवीं यस्तु भक्त्या समाहितः ।

शरीरं सार्थकं तस्य नृषु जन्म च सार्थकम् ॥

धन्याश्च पितरस्तस्य स तु धन्यतमः स्मृतः ।

न तस्य विद्यते पापं नापि मृत्युभयं तथा ॥

अतुलं लभते सौख्यं परत्र च महामते ।

गङ्गायां जायते मृत्युर्गङ्गास्मृतिपुरःसरः ॥

जो मनुष्य गंगाजीके पास आ करके भक्तिपरायण होकर गंगादेवीको प्रणाम करता है, उसका शरीर तथा मानवजन्म सार्थक है । उसके पितर धन्य हैं और उसे तो धन्यतम कहा गया है । उसे पाप नहीं लगता और मृत्युका भी भय नहीं रह जाता । महामते ! वह मनुष्य परलोकमें अतुलनीय सुख प्राप्त करता है, उसकी गंगामें मृत्यु होती है और आगे भी निरन्तर उसे गंगा-स्मरण बना रहता है । [महाभागवत]

श्रीगंगाजीके तटपर निवासका फल

तिष्ठेद् युगसहस्रं तु पदेनैकेन यः पुमान् ।

मासमेकं तु गङ्गायां समौ स्यातां न वा समौ ॥

लम्बतेऽवाक्शिरा यस्तु युगानामयुतं पुमान् ।

तिष्ठेद् यथेष्टं यश्चापि गङ्गायां स विशिष्यते ॥

जो पुरुष एक हजार युगोंतक एक पैरसे खड़ा होकर तटपर निवास करता है, वे दोनों समान हो सकते हैं अथवा यह भी सम्भव है कि समान न हों । जो मनुष्य दस हजार युगोंतक नीचे सिर करके वृक्षमें लटका रहे और जो इच्छानुसार गंगाजीके तटपर निवास करे, उन दोनोंमें गंगाजीके तटपर निवास करनेवाला ही श्रेष्ठ है । [महाभारत]

निवास करता है, वे दोनों समान हो सकते हैं अथवा यह भी सम्भव है कि समान न हों । जो मनुष्य दस हजार युगोंतक नीचे सिर करके वृक्षमें लटका रहे और जो इच्छानुसार गंगाजीके तटपर निवास करे, उन दोनोंमें गंगाजीके तटपर निवास करनेवाला ही श्रेष्ठ है । [महाभारत]

श्रीगंगाजीके सेवनका फल

तपसा ब्रह्मचर्येण यज्ञैस्त्यागेन वा पुनः ।

गतिं तां न लभेज्जन्तुर्गङ्गां संसेव्य यां लभेत् ॥

गंगाजीका सेवन करनेसे जीव जिस उत्तम गतिको प्राप्त करता है, उसे वह तपस्या, ब्रह्मचर्य, यज्ञ अथवा त्यागसे भी नहीं पा सकता । [महाभारत]

अलङ्कृतास्त्रयो लोकाः पथिभिर्विमलैस्त्रिभिः ।

यस्तु तस्या जलं सेवेत् कृतकृत्यः पुमान्भवेत् ॥

जिन्होंने तीन निर्मल मार्गोंद्वारा आकाश, पाताल तथा भूतल—इन तीन लोकोंको अलंकृत किया है, उन गंगाजीके जलका जो मनुष्य सेवन करेगा, वह कृतकृत्य हो जायगा । [महाभारत]

श्रीगंगाजीके शरण-ग्रहणका फल

ऋषिष्टुतां विष्णुपदीं पुराणां सुपुण्यतोयां मनसापि लोके ।

सर्वात्मना जाह्नवीं ये प्रपन्नास्ते ब्रह्मणः सदनं सम्प्रयाताः ॥

ऋषियोंद्वारा जिनकी स्तुति होती है, जो भगवान् विष्णुके चरणोंसे उत्पन्न, अत्यन्त प्राचीन तथा परम पावन जलसे भरी हुई हैं, उन गंगाजीकी जगत्में जो लोग मनके द्वारा भी सब प्रकारसे शरण लेते हैं, वे देहत्यागके पश्चात् ब्रह्मलोकमें जाते हैं । [महाभारत]

अप्रतिष्ठाश्च ये केचिदधर्मशरणाश्च ये ।

तेषां प्रतिष्ठा गङ्गेह शरणं शर्म वर्म च ॥

जगत्में जिनका कहीं आधार नहीं है तथा जिन्होंने धर्मकी शरण नहीं ली है, उनका आधार और उन्हें शरण देनेवाली श्रीगंगाजी ही हैं । वे उनका कल्याण करनेवाली तथा कवचकी भाँति उन्हें सुरक्षित रखनेवाली हैं । [महाभारत]

गंगाजलके पानका फल

यथा सुराणाममृतं पितृणां च यथा स्वधा ।

यथा यथा देवाणां तथा यथा यथा आत्मानाम् ॥

यथा यथा देवाणां तथा यथा यथा आत्मानाम् ॥

आत्मानं मन्यते लोको दिविष्ठमिव शोभितम् ॥

■ नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजम् ■



कहते हैं कि स्वर्गलोकमें देवगण यह गीत गाते हैं कि वे व्यक्ति धन्य हैं, जो भारतभूमिमें जन्म लेते हैं—

‘गायन्ति देवाः किल गीतकानि

धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।’

यह गीत देवतागण क्यों गाते हैं ? क्या यह भारतमें जन्म लेनेवालोंकी विशेषता है या इस देशकी ? नहीं, यह विशेषता तो भारतभूमिकी है, जिस भूमिपर पतितपावनी, कलिमलहारिणी, जगदुद्धारिणी माँ सुरसरि गंगाका सान्निध्य सबको सुलभतासे प्राप्त होता है।

माँ गंगाका यह सान्निध्य इतना चमत्कारी है कि दर्शन-स्पर्श, स्नान-पान और कीर्तनमात्रसे जन्म-मरणके बन्धनसे तो सदा-सर्वदाके लिये मनुष्यको मुक्त कर ही देता है, उसकी सात पीढ़ियोंको भी पवित्रकर तार देता है—

पुनाति कीर्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति।

अवगाढा च पीता च पुनात्यासप्तमं कुलम्॥

(महाभारत, वनपर्व ८५।९३)

‘गंगा अपना नाम उच्चारण करनेवालेके पापोंका नाश करती हैं, दर्शन करनेवालोंका कल्याण करती हैं तथा स्नान-पान करनेवालोंकी सात पीढ़ियोंतकको पवित्र करती हैं।’

जिस पतितपावनी गंगाका उद्गम ही सगरपुत्रोंके उद्धारके लिये हुआ, भगीरथकी तपस्या तथा त्रिदेवोंकी

कृपासे जो पृथ्वीपर प्रवाहित हुई और जिस गंगाजलके स्पर्शमात्रसे सगरपुत्र पापमुक्त हुए, वे गंगा स्वयमेव परमतीर्थ हैं—

‘सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्वदेवमयो हरिः।’

(नृसिंहपुराण)

गंगामें सभी तीर्थ समाहित हैं। भगवान् हरिमें सम्पूर्ण देवता समाहित हैं। जिस गंगाजलकी एक-एक बूँदमें और तरल तरंगोंके एक-एक शीतल कणमें तीर्थ विद्यमान हों, उसके तीर्थत्वका वर्णन शब्दोंमें कहाँतक किया जा सकता है। महाभारतके वनपर्वमें कहा है कि ‘न गङ्गासदृशं तीर्थं न देवः केशवात् परः॥’ ‘गंगाके समान कोई तीर्थ नहीं है तथा केशवसे परे कोई देव नहीं है।’ भगवान् विष्णुके चरणकमलोंसे निःसृत, ब्रह्माके कमण्डलुमें समाहित, भगवान् शंकरकी जटाओंमें विलीन तथा भगीरथके अथक प्रयासोंसे प्राप्त चिन्तामणिके सदृश लोकपावनी भगवती गंगाका सेवन क्षणभरके लिये भी जो प्राप्त कर ले, वह धन्य है।

गंगाजीका प्रादुर्भाव

अपने शास्त्रोंमें गंगाजीके प्रादुर्भावकी विभिन्न कथाएँ प्राप्त होती हैं। श्रीमद्भागवत एवं अन्य पुराणोंके अनुसार यह कथा है कि प्रह्लादके पौत्र दैत्योंके राजा बलिने त्रैलोक्यपर विजय प्राप्त करनेके अनन्तर श्रीशुक्राचार्यजीके आचार्यत्वमें महायज्ञका आयोजन किया। इन्द्रादि देवता दैत्योंसे पराभूत होकर अत्यन्त त्रस्त थे। परमात्म-प्रभु भगवान् विष्णु वामनरूप धारणकर यज्ञमें पधारे और उन्होंने बलिसे तीन पग धरतीकी याचना की। बलिने वामनभगवान्का अत्यधिक स्वागत किया और शुक्राचार्यके मना करनेपर भी तत्काल तीन पग भूमि देनेका संकल्प कर लिया। वामनभगवान्ने एक पगसे भूलोक माप लिया तथा दूसरे पगसे स्वर्गलोक (देवलोक) नापने लगे। उसी समय ब्रह्माजीने भगवान्के चरण-कमलकी पाद्य, अर्घ्य आदिसे पूजा की तथा चरणकमलका

प्रक्षालनकर उस जलको अपने कमण्डलुमें भर लिया। यही जल ब्रह्माके कमण्डलुसे निकलकर गंगाजलके रूपमें भूतभावन भगवान् सदाशिवकी जटाओंमें समाहित हो गया। इस प्रकार भगवती गंगा ब्रह्मा-विष्णु-महेश—इन तीनों देवताओंकी प्रिया हैं, इनकी शक्तिसे समन्वित हैं।

भगवान् विष्णुके चरणोंसे निःसृत होनेके कारण भगवती गंगाको 'विष्णुपदी' कहते हैं।

गर्गसंहितामें गंगाजीकी एक दूसरी कथा भी है— एक अत्यन्त सुन्दर गन्धर्वनगर था। एक बार देवर्षि नारद अपनी वीणा बजाते हुए घूमते-फिरते उस गन्धर्व-नगरमें पहुँच गये। नगरकी सुन्दरता देखकर वे चमत्कृत थे। उस नगरमें जितने गन्धर्व थे, वे बहुत सुन्दर थे, परंतु सबके सब विकलांग थे। किसीका हाथ टूटा था, किसीका पैर टूटा था, किसीकी एक आँख फूटी थी। नारदजी यह सब देखकर अत्यधिक आश्चर्यचकित थे। वे इस प्रकारकी विकलांगताका कारण ढूँढ़नेकी चेष्टा करने लगे, पर वे जिससे भी पूछते, वह उनकी बातका उत्तर न देकर उनकी उपेक्षा करता था। एक वृद्ध गन्धर्वसे विशेष अनुनय-विनयकर इसका कारण पूछा तो वह वृद्ध द्रवीभूत होकर बोला कि कुछ समय पूर्व नारद नामका एक साधु वीणा लेकर इस नगरमें आया था। वीणावादनकी अनभिज्ञता होते हुए भी उसने यहाँ वीणा बजायी। उसका असंगत वीणावादन सुनकर वीणा-वादिनी भगवती शारदाने क्रोधवश इस गन्धर्वनगरके सभी जीवोंको विकलांग बना दिया। तबसे उस नारदका पता नहीं है। यह घटना सुनकर नारदजी अत्यन्त द्रवित हो गये, उन्होंने उस वृद्ध गन्धर्वसे पूछा—‘अब इस गलतीके सुधारका उपाय क्या है?’ उस वृद्धने कहा कि इसका उपाय एक ही है कि नारदजी वीणावादनकी शिक्षा ग्रहणकर यहाँ आयें और सुसंगतरूपसे वीणावादन करें तो यहाँकी विकलांगता दूर हो सकती है। नारदजी इस कार्यको करनेका निश्चयकर सदाशिव भगवान् शंकरके पास गये तथा उनको सारी घटना सुनाकर उपाय पूछा। शंकरभगवान्ने कहा कि संगीतकी शिक्षा वीणावादिनी

भगवती शारदासे लेनेपर यह कार्य पूर्ण हो सकता है। नारदजीने भगवती शारदासे प्रार्थनाकर संगीतकी शिक्षा ग्रहण की। संगीतकलामें पारंगत हो जानेपर वे इसकी परीक्षाके लिये भगवान् विष्णुके पास गये और उनके समक्ष वीणावादन किया। देवर्षि नारदके वीणावादन और संगीतलहरीको सुनकर भगवान् विष्णु द्रवीभूत होकर जलरूपमें परिणत हो गये, जिसे तत्काल ब्रह्माजीने अपने कमण्डलुमें भर लिया। इस प्रकार गंगा भगवान् विष्णुके द्रवीभूत होनेके कारण ब्रह्मद्रवके रूपमें प्रकट हुई और इसी नामसे प्रसिद्ध हुई।

ब्रह्मद्रवकी और अन्य कथाएँ भी हैं, बृहद्धर्मपुराणके अनुसार भगवान् विष्णु शिवजीके ताण्डव नृत्य एवं सामगानसे आनन्दमगनावस्थामें जलमय हो गये। उनके दाहिने पैरके अँगूठेसे जलधार बह निकली। जब ब्रह्माजीने यह देखा तो उन्होंने वह जल कमण्डलुमें भर लिया। वास्तवमें ये सब कथाएँ तो गंगाजीके स्वरूपकी हैं।

भूलोकमें भगवती गंगाके अवतरणकी एक विशेष कथा है। सूर्यवंशमें जहाँ मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् रामने जन्म लिया था, उनके पूर्वज थे महाराज सगर। वे चक्रवर्ती सम्राट् थे, उनकी केशिनी और सुमति नामकी दो रानियाँ थीं। केशिनीके पुत्रका नाम असमंजस था और सुमतिके साठ हजार पुत्र हुए। ये सभी उद्वण्ड और दुष्ट प्रकृतिके थे। असमंजसके एक पुत्रका नाम अंशुमान् था, यह अत्यन्त धार्मिक एवं देव-गुरुपूजक था। पुत्रोंसे दुखी होकर महाराज सगरने अपने पौत्र अंशुमान्को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

एक बार महाराज सगरने अश्वमेधयज्ञका अनुष्ठान किया, उसके लिये घोड़ा छोड़ा, इन्द्रने अश्वमेधयज्ञके उस घोड़ेको चुराकर पातालमें ले जाकर कपिलमुनिके आश्रममें बाँध दिया। ध्यानावस्थित मुनि इससे अनभिज्ञ थे। सगरके साठ हजार अहंकारी पुत्रोंने पृथ्वीका कोना-कोना छान मारा, परंतु वे घोड़ेको न पा सके। अन्तमें वे खोजते-खोजते कपिलमुनिके आश्रममें जा पहुँचे। वहाँ घोड़ा बाँधा

इसके बाद भगवती भागीरथी गंगाजी मार्गको हरा-भरा एवं शस्य-श्यामल करते हुए अनेक तीर्थोंमें होती हुई कपिलमुनिके आश्रममें पहुँचीं, जहाँ महाराजा भगीरथके साठ हजार पूर्वज भस्मकी ढेरी बने पड़े थे।

Hindiism-Disorder-Serif https://doi.org/10.2196/dm.2021.17408

इसके साथ ही इस क्षेत्रमें हिंसा, द्वेष, कलह, असत्यभाषण, प्रतिग्रह, अशास्त्रीय वचन, परान्न-भोजन, परद्रव्यग्रहण, शोक-मोह, नास्तिकता, भिक्षा, लोभ-लालच, पापवृत्ति, चपलता-परिहास आदि पापकर्मोंका फल भी अत्यन्त भयावह होता है। अतः विशेषकर गंगाके सन्निकट रहनेवाले व्यक्तिको निरन्तर विशेष सावधान रहनेकी आवश्यकता है।

[illegible]

गंगापान तथा नामस्मरणकी विशेष महिमा

जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्त होनेके लिये गंगाकी विशेष महिमा है। अन्तिम समयमें गंगाका एक बिन्दु जल पीनेपर भी परमपदकी प्राप्ति होती है—

गंगाम्भः शीकरं यस्तु सम्मितं सर्षपस्य च ।

प्राप्नोति मृत्युकाले तु स गच्छेत् परमं पदम् ॥

(पद्मपुराण क्रियायोगसारखण्ड ७१।७२)

गंगाक्षेत्रमें शरीर-विसर्जनका तो विशेष महत्त्व है ही, परंतु यदि किसी कारणवश गंगाका सान्निध्य न प्राप्त हो सके तो गंगाकी इतनी महिमा है कि सौ योजन दूरसे भी मृत्युशय्यापर पड़ा व्यक्ति पतितपावनी गंगाका स्मरण करते हुए गंगाका नाम उच्चारण कर ले तो वह सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त होकर विष्णुलोकमें पहुँच जाता है—

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि ।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

दूर देशमें मरनेवाले व्यक्तिकी अस्थियोंका विसर्जन गंगामें कर दिया जाय तो उस जीवको उत्तम लोक प्राप्त होते हैं। इसके लिये काशी, प्रयाग और हरिद्वार आदि स्थान विशेष प्रशस्त एवं महत्त्वपूर्ण माने गये हैं।

मनुष्यकी हड्डी जितने समयतक गंगाजीके जलमें पड़ी रहती है, उतने हजार वर्षोंतक वह स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है—

यावदस्थि मनुष्यस्य गङ्गातोयेषु तिष्ठति ।

तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥

(महाभारत)

गंगाके सन्निकट तर्पण-श्राद्ध करनेपर पितरोंको

अत्यधिक प्रसन्नता होती है और वे विशेष रूपमें आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

पितरोंका उद्गार

व्यासजी बताते हैं कि गंगास्नानके लिये यात्रा करनेवाले अपने पुत्रको देखकर **स्वर्गमें स्थित** उसके पितर प्रसन्नतापूर्वक उसकी प्रशंसा करते हुए परस्पर वार्तालाप करते हैं कि हम सबने सद्गति प्राप्तिके लिये पूर्वकालमें जो पुण्यकर्म किये थे, उनके फल निश्चय ही अब अक्षय हो जायँगे; क्योंकि हमारे कुलमें ऐसा पुत्र हुआ है, जो गंगाजीमें परम आस्थावान् है। इस सत्पुत्रके द्वारा गंगाजलसे तर्पित हुए हम पितृगण निश्चय ही उस परम धामको प्राप्त करेंगे, जो देवताओंके लिये भी दुर्लभ है। आज भगवती गंगाकी सन्निधिमें हमारे निमित्त यह सत्पुत्र विविध पदार्थों (दुग्ध, जल, फल, अन्न, वस्त्र, शय्या, ताम्बूल, वाहन आदि)–का दान करेगा, जिससे सर्वदा हमें इन पदार्थोंकी प्राप्ति होती रहेगी। इसी प्रकार अनेक प्रकारके दुःखोंसे संतप्त, **नरकमें स्थित** पितर भी गंगास्नानके लिये जाते हुए अपने पुत्रको देखकर परस्पर चर्चा करते हैं कि हम लोगोंने नारकीय यातना देनेवाले जो कर्म किये थे, वे सभी आज इस सत्पुत्रके कृपाप्रसादसे विनष्ट हो जायँगे तथा हम सभी पितर नरकोंकी असह्य यातनाओंसे मुक्त होकर पुत्रके अनुभावसे परमगतिको प्राप्त करेंगे।*

गंगाके प्रति हमारा दायित्व

आध्यात्मिकरूपमें गंगा जितनी पवित्र, निर्मल, स्वच्छ और पतितपावनी हैं, अपने ऋषि-महर्षियोंने भौतिकरूपसे भी गंगाको उतना ही स्वच्छ, निर्मल और

* स्वर्गस्थाः पितरः सर्वे गच्छन्तं जाह्नवीतटे ।

सन्दृश्य हृष्टाः शंसन्ति वदन्त इति जैमिने । यत्पुण्यं कृतमस्माभिः सद्गतिप्राप्तये पुरा ॥

भविष्यत्यक्षयं तच्च यतः पुत्रोऽयमीदृशः । अनेन गाङ्गैः सलिलैर्वयं सम्प्रति तर्पिताः ॥

यास्यामः परमं धाम दुर्लभं यत्सुरैरपि । गङ्गायां यानि द्रव्याणि दास्यत्यस्माकमात्मजः ॥

अस्मभ्यं तानि सर्वाणि भविष्यन्त्यक्षयाणि वै । नरकस्थाश्च पितरः सर्वदुःखसमन्विताः ॥

वदन्तीति सुतं दृष्ट्वा गच्छन्तं जाह्नवीतटम् । कृतानि यानि पापानि नरकक्लेशदानि वै ॥

यास्यन्ति संक्षयं तानि पुत्रस्याऽपि प्रसादतः । विमुक्ता नरकक्लेशैर्वयं सर्वे सुदःसहैः ॥

अथ पत्रप्रसादेन यास्यामः परमां गतिम् । (पद्मपुराण)

भौतिक विज्ञानके परीक्षणसे भी यह बात सिद्ध हो चुकी है कि गंगाजल एक अद्भुत वस्तु है और शुद्ध गंगाजल पाना बहुत बड़ा सौभाग्य है। अभी कुछ समय पूर्व ही 'यूनेस्को' से आये एक वैज्ञानिक दलने हरिद्वारके निकट गंगाके पानीका परीक्षण करके यह बताया कि जिस स्थानमें पानीकी धारामें मुर्दे, हड्डियाँ आदि दूषित वस्तुएँ बह रही हैं, वहीं कुछ फुट नीचेका गंगाजल पूर्ण शुद्ध है। मैकग्रिल यूनीवर्सिटीके एक प्रोफेसरने प्रायः तीन दशक पूर्व अपने

Hinduism Discord Server <https://discord.gg/dharma> | MADE WITH LOVE BY AVINASH SHARMA

‘कल्याण’ का उद्देश्य और इसके नियम

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, धर्म और सदाचारसमन्वित लेखोंद्वारा जन-जनको कल्याण-पथ (आत्मोद्धारके सुमार्ग) पर अग्रसरित करनेकी प्रेरणा देना इसका एकमात्र उद्देश्य है।

नियम— भगवद्भक्ति, ज्ञान, वैराग्यादि प्रेरणाप्रद एवं कल्याण-मार्गमें सहायक अध्यात्मविषयक, व्यक्तिगत आक्षेपरहित लेखोंके अतिरिक्त अन्य विषयोंके लेख ‘कल्याण’ में प्रकाशित नहीं किये जाते। लेखोंको घटाने-बढ़ाने और छापने-न-छापनेका अधिकार सम्पादकको है। अमुद्रित लेख बिना माँगे लौटाये नहीं जाते। लेखोंमें प्रकाशित मतके लिये सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

१-‘कल्याण’ का नया वर्ष जनवरीसे आरम्भ होकर दिसम्बरतक रहता है, अतः ग्राहक जनवरीसे ही बनाये जाते हैं। वर्षके मध्यमें बननेवाले ग्राहकोंको जनवरीका विशेषाङ्क एवं अन्य उपलब्ध मासिक अङ्क दिये जाते हैं।

२-वार्षिक सदस्यता-शुल्क—भारतमें ₹२०० (सजिल्द ₹२२०), विदेशमें हवाई डाकसे भेजनेके लिये US\$ 45 (₹ २७००) (चेक कलेक्शनके लिये US\$ 6 अतिरिक्त)।

पंचवर्षीय शुल्क—भारतमें ₹१००० (सजिल्द ₹११००), विदेशमें हवाई डाकसे भेजनेके लिये US\$ 225 (₹ १३५००) (चेक कलेक्शनके लिये US\$ 6 अतिरिक्त)।

डाकखर्च आदिमें अप्रत्याशित वृद्धि होनेपर पंचवर्षीय ग्राहकोंद्वारा अतिरिक्त राशि भी देय हो सकती है।

३-समयसे सदस्यता-शुल्क प्राप्त न होनेपर आगामी वर्षका विशेषाङ्क वी०पी०पी०से भेजा जाता है। इसपर डाकशुल्कका ₹१० अतिरिक्त देय होता है।

४-जनवरीका विशेषाङ्क (वर्षका प्रथम अङ्क) रजिस्ट्री/वी०पी०पी०से तथा फरवरीसे दिसम्बरतकके अङ्क प्रतिमासके प्रथम सप्ताहतक साधारण डाकसे भेजे जाते हैं।

५-पत्र-व्यवहारमें ‘ग्राहक-संख्या’ अवश्य लिखी जानी चाहिये और पता बदलनेकी सूचनामें ग्राहक-संख्या, पिनकोडसहित पुराना और नया पता लिखना चाहिये।

६-‘कल्याण’ में व्यवसायियोंके विज्ञापन किसी भी स्थितिमें प्रकाशित नहीं किये जाते।

व्यवस्थापक—‘कल्याण’, पत्रालय—गीताप्रेस—२७३००५ (गोरखपुर)

गीताप्रेसके दो महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

महाभारत—सटीक [छः खण्डोंमें सेट] (कोड 728)—महाभारत हिन्दू-संस्कृतिका महान् ग्रन्थ है। इसे पंचम वेद भी कहा जाता है। यह भारतीय धर्म-दर्शनके गूढ़ रहस्योंका अनुपम भण्डार है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसमें भगवान् श्रीकृष्णके गुण-गौरवका गान, उपनिषदोंका सार तथा इतिहास-पुराणोंका आशय है। मूल्य ₹१९५०

मानस-पीयूष [सात खण्डोंमें सेट] (कोड 86)—महात्मा श्रीअञ्जनीनन्दन शरणके द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ श्रीरामचरितमानसकी सबसे बृहत् टीका है। यह महान् ग्रन्थ ख्यातिलब्ध रामायणियों, उत्कृष्ट विचारको, तपोनिष्ठ महात्माओं एवं आधुनिक मानसविज्ञोंकी एक साथ व्याख्याओंका अनुपम संग्रह है। मूल्य ₹२१००

मानस-पीयूष-परिशिष्ट (कोड 1935) मूल्य ₹७५



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

गंगाजीमें वर्ज्य शास्त्रोक्त कर्म

गङ्गां पुण्यजलां प्राप्य चतुर्दश विवर्जयेत् । शौचमाचमनं केशं निर्माल्यं मलघर्षणम् ॥
 गात्रसंवाहनं क्रीडां प्रतिग्रहमथो रतिम् । अन्यतीर्थरतिं चैव अन्यतीर्थप्रशंसनम् ॥
 वस्त्रत्यागमथाघातं संतारं च विशेषतः । ×××परिधेयाम्बराम्बूनि गङ्गास्रोतसि न त्यजेत् ॥
 न दन्तधावनं कुर्याद्गङ्गागर्भे विचक्षणः । कुर्याच्चैन्मोहतः पुण्यं न गङ्गास्नानजं लभेत् ॥
 प्रभातेऽन्यत्र तां कृत्वा दन्तकाष्ठादिकक्रियाम् । रात्रिवासं परित्यज्य गङ्गायां स्नानमाचरेत् ॥
 बाह्यभूमिमगत्वा यो गङ्गायां स्नानमाचरेत् । गङ्गास्नानफलं सोऽपि सम्पूर्णं च लभेन्न हि ॥
 मूत्रं वाऽथ पुरीषं वा गङ्गातीरे करोति यः । न दृष्ट्वा निष्कृतिस्तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥
 श्लेष्माणं वाऽपि निष्ठीवं दूषिकाम्बाऽश्रु वा मलम् । गङ्गातीरे त्यजेद्यस्तु स नूनं नारकी भवेत् ॥
 उच्छिष्टं कफकञ्चैव गङ्गागर्भे च यस्त्यजेत् । स याति नरकं घोरं ब्रह्महत्यां च विन्दति ॥
 गङ्गारोधसि यः पापं कुरुते मूढधीर्नरः । तदक्षयं भवेन्नूनं नान्यतीर्थेषु शाम्यति ॥
 अन्यतीर्थे कृतं पापं गङ्गायां च विनश्यति । गङ्गायां यत्कृतं पापं तत्कुत्राऽपि न शाम्यति ॥
 तस्मात्पापं न कर्तव्यं गङ्गायां शास्त्रकोविदैः । कर्मणा मनसा वाचा कर्तव्यो धर्मसङ्ग्रहः ॥

पुण्यतोया भगवती गंगाके निकट जाकर विशेषरूपसे निम्नलिखित चौदह कार्य कभी न करने चाहिये—समीपमें शौच, गंगाजीमें आचमन (कुल्ला), बाल झाड़ना, निर्माल्य (भगवान्को चढ़ी हुई पूजा-सामग्री) डालना, मैल छुड़ाना, शरीर मलना, क्रीडा करना, दान लेना, रतिक्रिया, दूसरे तीर्थके प्रति अनुराग, दूसरे तीर्थकी महिमा गाना, कपड़ा धोना या छोड़ना, जल पीटना तथा तैरना। ××× [ब्रह्माण्डपुराण] भगवती गंगाके पावन जलमें स्नान करनेके पश्चात् धारण किये हुए वस्त्रोंको जलमें निचोड़ना नहीं चाहिये। विद्वान् व्यक्तिको चाहिये कि वह गंगाजलमें दन्तधावन न करे, यदि अज्ञानवश करता है तो उसे गंगास्नानका पुण्य प्राप्त नहीं होता। प्रातःकाल गंगास्नानसे पूर्व अन्य स्थानपर शौच-दन्तधावनादि नित्यकर्मोंसे निवृत्त होकर तथा रात्रिमें पहने हुए वस्त्रोंको परिवर्तितकर, पवित्र वस्त्र धारणकर ही गंगाजीमें स्नान करना चाहिये। जो मनुष्य दन्तधावनादि क्रियाओंको गंगाक्षेत्रसे दूर न करके गंगाक्षेत्रमें ही करता है, उसे गंगास्नानका सम्पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता। गंगातटपर जो मनुष्य मल-मूत्र आदिका परित्याग करता है, उसका नरकोंसे करोड़ों कल्पोंमें भी उद्धार नहीं हो सकता। जो मनुष्य गंगाजीमें कफ अथवा थूक अथवा आँखका मल (कीचड़) अथवा किसी शारीरिक मल या अन्य किसी भी प्रकारके मलको छोड़ता है, वह निश्चय ही नरक प्राप्त करता है। जो मनुष्य गंगाजीमें उच्छिष्ट (जूठा, बचा हुआ या बासी) पदार्थों अथवा कफ आदि दैहिक मलोंका प्रक्षेप करता है, उसे ब्रह्महत्याका पाप लगता है और दीर्घकालपर्यन्त भयानक नरक-यातना भोगनी पड़ती है। जो मूर्ख मनुष्य अज्ञानवश गंगातटपर पापाचरण करता है, उसका वह पाप अक्षय हो जाता है तथा उस पापका क्षय किसी भी तीर्थमें नहीं हो सकता। दूसरे तीर्थोंमें किये गये पाप गंगाजीके प्रभावसे विनष्ट हो जाते हैं, किंतु गंगातटपर किये गये पापोंका परिशमन किसी भी तीर्थमें नहीं हो पाता, अतएव शास्त्रज्ञ मनुष्यको गंगाकी सन्निधिमें किये गये पापोंकी गुरुताको समझकर मन, वाणी अथवा कर्मसे कभी भी पापाचरण नहीं करना चाहिये, अपितु सर्वदा धर्माचरण ही करना चाहिये। [पद्मपुराण क्रियायोगसारखण्ड]